ठीहा छत्तीसगढ़

समस्या से समाधान तक

हमारे **ई-पेपर** को पढ़ने के लिए इस **QR कोड को स्कैन करें**

हमारे दैनिक खबरों को **डिजिटल माध्यम** में देखने के लिए इस **QR कोड को स्कैन करें**

|01

वर्ष-01 | अंक-05 | पाक्षिक | 1 से 15 अक्टूबर 2026 | मूल्य : 20 | पृष्ठ- 12

मुख्यमंत्री का सिंगापुर दौरा: छत्तीसगढ़ को मिले 43,600 करोड़ रुपए के निवेश प्रस्ताव



छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय हाल ही में सिंगापुर के अहम विदेशी दौरे पर गए थे। उनका यह दौरा अब संपन्न हो चुका है और वे प्रदेश लौट आए हैं। राज्य के औद्योगिक और आर्थिक विकास के नजरिए से मुख्यमंत्री का यह दौरा बेहद सफल और अहम साबित हुआ है। इस यात्रा से छत्तीसगढ़ को न सिर्फ भारी-भरकम वैश्विक निवेश मिला है, बल्कि युवाओं के रोजगार, आधुनिक तकनीक और कौशल विकास के लिए भी कई नए रास्ते खुले हैं।

आइए जानते हैं कि मुख्यमंत्री का यह विदेश दौरा छत्तीसगढ़ के लिए क्यों इतना महत्वपूर्ण है और इस यात्रा से राज्य को क्या-क्या मिला:

1. 43,600 करोड़ रुपए का भारी-भरकम विदेशी निवेश

इस विदेशी दौरे की सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि राज्य को अब तक कुल 43,600 करोड़ रुपए के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) के प्रस्ताव मिल चुके हैं। दौरे के अंतिम दिन वैलेंसी इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड ने राज्य में एग्रो एवं फूड प्रोसेसिंग के क्षेत्र में 350 करोड़ रुपए के नए निवेश का प्रस्ताव दिया है। इसके अलावा टीसीएस, एसएमबीसी, तोलाराम ग्रुप, एग्रोकॉर्प, इंडियन ओशियन ग्रुप और ब्लू एक्वा जैसी 15 से अधिक बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ सीईओ राउंडटेबल में निवेश और साझेदारी पर ठोस चर्चा हुई।

2. युवाओं के लिए विश्वस्तरीय कौशल विकास (स्किलिंग)

मुख्यमंत्री की उपस्थिति में छत्तीसगढ़ सरकार और सिंगापुर की 'आईटीई एजुकेशन सर्विसेस' के बीच तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए एक अहम एमओयू साइन किया गया। सिंगापुर में सिस्को, बीवायडी और सिंगापुर एयरलाइंस जैसी बड़ी कंपनियां शैक्षणिक संस्थानों के साथ मिलकर पाठ्यक्रम तैयार करती हैं। इसी मॉडल को छत्तीसगढ़ में लागू किया जाएगाताकि उद्योगों की जरूरत के मुताबिक युवाओं को आधुनिक प्रशिक्षण देकर सीधा रोजगार से जोड़ा जा सके।



3. किसानों की उपज को मिलेगा अंतरराष्ट्रीय बाजार

वैलेंसी इंटरनेशनल प्राइवेट लिमिटेड छत्तीसगढ़ में एक इंटीग्रेटेड एग्रो एवं फूड प्रोसेसिंग और एक्सपोर्ट हब स्थापित करेगी। इस हब में काजू, तिल, दलहन और मूंगफली की प्रोसेसिंग की जाएगी। इससे किसानों की उपज का राज्य में ही मूल्य संवर्धन होगा, उन्हें अपनी फसल के अच्छे दाम मिलेंगे और स्थानीय स्तर पर रोजगार के ढेरों नए अवसर पैदा होंगे।

4. एआई (AI) और डिजिटल फाइनेंस में ट्रेनिंग

आने वाला समय आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल फाइनेंस का है। इसे ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री ने 'ग्लोबल फाइनेंस एंड टेक्नोलॉजी नेटवर्क' (जीएफटीएन) के समूह सीईओ सोपनेंदु मोहंती, जेम्स बोए और एंथोनी थॉमस के साथ महत्वपूर्ण बैठक की। इस चर्चा के बाद राज्य के युवाओं को एआई और डिजिटल तकनीक में प्रशिक्षित करने और नए स्टार्टअप्स के लिए विशेष 'टेक लैब' स्थापित करने की रूपरेखा तैयार हुई है।

5. वैश्विक मंच पर छत्तीसगढ़ की मजबूत उपस्थिति भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के नामांकन पर छत्तीसगढ़ ने पहली बार 'सिंगापुर-इंडिया नेटवर्क फॉर ग्रोथ' (सिंग) फोरम 2026 में हिस्सा लिया, जो राज्य के लिए एक बड़ी उपलब्धि है। इसके अलावा, मुख्यमंत्री ने सिंगापुर के विदेश मंत्री विवियन बालाकृष्णन से भी खास मुलाकात की। इस दौरान सिंगापुर के बेहतरीन शहरी नियोजन, आधुनिक तकनीक और विशेषज्ञता का लाभ छत्तीसगढ़ के विकास मॉडल में शामिल करने पर विचार-विमर्श किया गया।



संपादकीय चुनाव आयोग

सारख का सवाल

चुनाव आयोग पर भरोसे का संकट

किसी भी लोकतंत्र में चुनाव की निष्पक्षता केवल मतपेटी या ईवीएम की सुरक्षा से तय नहीं होती। उसकी असली पूँजी वह भरोसा है जो हारने वाला भी नतीजे पर करता है। इस भरोसे की ज़िम्मेदारी चुनाव आयोग के कंधों पर है, और आज वही संस्था सवालों के घेरे में है। मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को लेकर उठे विवाद के बाद कांग्रेस ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की माँग पर देशव्यापी प्रदर्शन किए, और कई जगह पुलिस ने कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया। 7 अक्टूबर को राहुल गांधी और इंडिया गठबंधन के सांसद जंतर-मंतर पहुँचे। यह टकराव अब एक दिन के धरने से आगे बढ़कर सतत राजनीतिक अभियान बन चुका है। सवाल सिर्फ़ एक व्यक्ति के पद पर बने रहने का नहीं है। सवाल उस संस्था की साख का है जिस पर पूरा चुनावी तंत्र टिका है।

चुनाव आयोग की भूमिका खेल के रेफरी जैसी है। रेफरी से उम्मीद होती है कि वह सही फ़ैसले दे, और यह भी कि हर खिलाड़ी को वह निष्पक्ष दिखे। अगर टीमों का एक बड़ा हिस्सा रेफरी की नीयत पर ही शक करने लगे, तो मैच का नतीजा चाहे जो हो, उसकी वैधता पर सवाल उठते रहते हैं। भारतीय चुनाव आयोग की गिनती कभी दुनिया की सबसे भरोसेमंद चुनावी संस्थाओं में होती थी। उसने टी.एन. शेषन के दौर में अपनी स्वायत्तता का लोहा मनवाया और दशकों तक करोड़ों मतदाताओं को यक़ीन दिलाया कि उनका वोट गिना जाएगा और उसकी क़ीमत बराबर होगी। आज अगर विपक्ष का एक बड़ा हिस्सा आयोग को "सत्ता की कठपुतली" बता रहा है, तो यह उस विरासत के लिए चिंताजनक संकेत है, चाहे आरोप कितने भी सही या ग़लत हों।

मौजूदा विवाद की जड़ मतदाता सूची का पुनरीक्षण है। इसमें कोई दो राय नहीं कि सूची का समय-समय पर शुद्धिकरण ज़रूरी है। मृत या स्थानांतरित मतदाताओं के नाम हटना और दोहरी प्रविष्टियाँ ख़त्म होना स्वस्थ चुनावी व्यवस्था के लिए आवश्यक है। लेकिन शुद्धिकरण की कसौटी यह है कि कोई पात्र नागरिक सूची से बाहर न हो जाए। जब भी बड़े पैमाने पर नाम जुड़ते या कटते हैं, तो सबसे कमज़ोर तबके, यानी प्रवासी मज़दूर, ग़रीब, महिलाएँ और अल्पसंख्यक, सबसे ज़्यादा जोखिम में होते हैं। उनके पास दस्तावेज़ जुटाने, दौड़-भाग करने और आपत्ति दर्ज कराने के संसाधन कम होते हैं। इसलिए यह प्रक्रिया जितनी पारदर्शी होगी, उतना ही आयोग का पक्ष मज़बूत होगा। हटाए गए नामों की सूची, उनके कारण और अपील की व्यवस्था सार्वजनिक होना एक प्रशासनिक औपचारिकता नहीं, बल्कि भरोसे की शर्त है।

विपक्ष का अभियान राहुल गांधी के "वोट चोरी" के आरोपों से जुड़ा है। जंतर-मंतर और अन्य जगहों के प्रदर्शन इन्हीं आरोपों और आयोग से जवाबदेही की माँग के समर्थन में हुए हैं। इसके अलावा मणिपुर में कांग्रेस के प्रदर्शन के दौरान पार्टी के एक नेता ने एक अख़बार की रिपोर्ट का हवाला दिया, जिसके अनुसार चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने कुछ बातों पर आपत्तियाँ उठाई थीं। इस रिपोर्ट की पुष्टि या खंडन आयोग को स्वयं करना चाहिए। लोकतंत्र में गंभीर आरोपों का जवाब चुप्पी या राजनीतिक पलटवार से नहीं, तथ्यों और दस्तावेज़ों से दिया जाता है। अगर आरोप निराधार हैं, तो उन्हें आँकड़ों के साथ खारिज करना आयोग के लिए सबसे बड़ा जवाब होगा। और अगर कहीं चूक हुई है, तो उसे स्वीकार कर सुधारना ही संस्था की गरिमा बचा सकता है। आयोग और सरकार का पक्ष भी पूरी गंभीरता से सुना जाना चाहिए, क्योंकि अभी तक आरोप साबित नहीं हुए हैं, और राजनीतिक आरोप तथा सिद्ध तथ्य के बीच का फ़र्क़ बना रहना चाहिए।

मुख्य चुनाव आयुक्त को हटाना जान-बूझकर कठिन रखा गया है, ताकि कोई सरकार असुविधाजनक अधिकारी को आसानी से न हटा सके। अनुच्छेद 324(5) के तहत उन्हें सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की तरह ही हटाया जा सकता है, यानी संसद के दोनों सदनों में विशेष बहुमत से। इसी राह पर चलते हुए राज्यसभा के 73 विपक्षी सदस्यों ने "सिद्ध कदाचार" का आरोप लगाते हुए हटाने का नया नोटिस दिया है, जिसमें नौ आरोप गिनाए गए हैं। इससे पहले 24 अप्रैल का एक नोटिस राज्यसभा में लंबित है। यह सही रास्ता है, क्योंकि इसमें आरोपों की जाँच होती है और प्रक्रिया संविधान के दायरे में चलती है। मगर संसद में आँकड़े क्या कहते हैं, यह भी सबको पता है। इसलिए सवाल उठता है कि यह मुहिम हटाने की वास्तविक कोशिश है या जनमत बनाने की रणनीति। जवाब जो भी हो, इतना तय है कि सिर्फ़ सड़क के दबाव से संवैधानिक पदाधिकारी को हटाने की माँग लोकतांत्रिक मर्यादाओं से मेल नहीं खाती।

लोकतंत्र में विरोध का अधिकार मूल्यवान है, लेकिन संस्थाओं पर हमला दोधारी तलवार है। जब नेता कहते हैं कि कोई व्यक्ति "वैध मुख्य चुनाव आयुक्त" ही नहीं है, तो वे अनजाने में उस पूरे ढाँचे की वैधता पर सवाल खड़ा करते हैं जिसके तहत वे ख़ुद चुनाव लड़ते और जीतते हैं। जिन राज्यों में विपक्षी दल सरकार चला रहे हैं, वे भी इसी आयोग की कराई गई प्रक्रिया से सत्ता में आए हैं। अगर हर चुनावी हार के बाद आयोग को कठघरे में खड़ा करने की परंपरा बन गई, तो नुक़सान किसी एक पार्टी का नहीं, पूरे लोकतंत्र का होगा। इसलिए विपक्ष को चाहिए कि वह आरोप ठोस साक्ष्यों के साथ रखे और व्यक्ति पर सवाल को संस्था पर अविश्वास में न बदलने दे।

प्रदर्शनों के दौरान हिरासत, बैरिकेड और पानी की बौछार की तस्वीरें भी चिंता की वजह हैं। असम में कांग्रेस नेता गौरव गोगोई को हिरासत में लिया गया, और अन्य प्रदर्शनों में योगेंद्र यादव, दीपंकर भट्टाचार्य जैसे नेता भी हिरासत में लिए गए। शांतिपूर्ण विरोध नागरिकों का मौलिक अधिकार है। क़ानून-व्यवस्था बनाए रखना पुलिस का दायित्व है, पर हर विरोध को रोकने की प्रवृत्ति ख़ुद उसी असंतोष को हवा देती है जिसे शांत करना मक़सद होता है। जिस मुद्दे के केंद्र में निष्पक्षता का सवाल हो, उस पर होने वाले प्रदर्शनों से निपटने में सरकार का आचरण भी निष्पक्ष और संयमित दिखना चाहिए।

संकट से निकलने के लिए तीन कदम ज़रूरी हैं। पहला, एसआईआर की प्रक्रिया की स्वतंत्र समीक्षा हो। दिल्ली कांग्रेस ने भी यही माँग उठाई है, और आयोग इसे विपक्ष की माँग कहकर टालने के बजाय स्वयं पहल करे, तो उसकी साख बढ़ेगी। इसके लिए सेवानिवृत्त न्यायाधीश या स्वतंत्र विशेषज्ञों की निगरानी में ऑडिट कराया जा सकता है, और उसके नतीजे सार्वजनिक किए जा सकते हैं। दूसरा, आयोग हटाए और जोड़े गए नामों के आँकड़े खुले रूप में उपलब्ध कराए, ताकि हर राजनीतिक दल और नागरिक संगठन उन्हें परख सके। तीसरा, सत्ता और विपक्ष के बीच संवाद की कोई औपचारिक व्यवस्था बने। सर्वदलीय बैठक या संसदीय समिति में इस विवाद पर चर्चा हो, ताकि मसला सड़क और संसद के गतिरोध में फँसा न रहे। लंबी अवधि में चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति प्रक्रिया की निष्पक्षता पर भी खुली बहस होनी चाहिए, क्योंकि जिस प्रक्रिया से आयुक्त चुने जाते हैं, उसी से उनकी स्वतंत्रता की धारणा बनती है।

चुनाव आयोग कोई सामान्य सरकारी विभाग नहीं है। वह लोकतंत्र की उस नींव का रखवाला है जिस पर जनादेश की पवित्रता टिकी है। इस संस्था की ताक़त न उसके अधिकारों में है, न उसके नियमों में, बल्कि उस भरोसे में है जो आम मतदाता उस पर करता है। एक बार यह भरोसा दरक जाए, तो उसे जोड़ना कहीं ज़्यादा मुश्किल होता है। इसलिए ज़रूरत है कि सत्ता पक्ष और विपक्ष, दोनों इस विवाद को जीत-हार के चश्मे से देखने के बजाय संस्था की साख के चश्मे से देखें। आयोग को पारदर्शिता से अपनी बात रखनी होगी, विपक्ष को साक्ष्य और संवैधानिक रास्ते पर टिकना होगा, और सरकार को असहमति के लिए जगह छोड़नी होगी। लोकतंत्र में जीतना ज़रूरी है, पर यह भरोसा बनाए रखना उससे भी ज़्यादा ज़रूरी है कि चुनाव निष्पक्ष थे।



स्वामी-श्रीराम डिजिटल, प्रकाशक एवं मुद्रक- देवानंद द्वारा ए. आर प्रिंटर्स, बी-1, रेमण्ड शोरूम के सामने, शिवम मार्केट, पंडरी, रायपुर, जिला- रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित कर 875 महावीर कटपीस के सामने, बैजनाथपारा, रायपुर, जिला- रायपुर, छत्तीसगढ़, पिन नंबर- 492001 से प्रकाशित। RNI No.- CTMUL/26/A5959, संपादक- **देवानंद**, मोबाइल नंबर- 99269 33309

छत्तीसगढ़ में स्मृति की एंट्री... क्या वाकई बदल जाएगा 2028 का सियासी परसेप्शन ?

रोचक मुकाबले की तरफ बढ़ती छत्तीसगढ़ की सियासत



• **आरती बेनिया,** संवाददाता, रायपुर

छत्तीसगढ़ राज्य बनने के बाद, साल 2001 से 2003 के बीच की राजनीति बड़ी दिलचस्प हुआ करती थी। वह सूबे की सियासत का एक ऐसा दौर था जब मुख्यमंत्री अजीत जोगी और केंद्रीय राजनीति के चाणक्य विद्याचरण शुक्ल जैसे दिग्गज आमने-सामने थे। दूसरी तरफ, मूंछों पर ताव देने वाले और अपनी शेरो-शायरी से महफिल लूटने वाले दिलीप सिंह जूदेव का अपना एक अलग जलवा था। उस समय मीडिया को कभी फ्रंट पेज की लीड खबर ढूंढने की चिंता नहीं होती थी, क्योंकि हर सुबह एक नया सियासी धमाका तय रहता था। नेताओं के बयानों में धार भी होती थी और मर्यादा भी।

15 साल की शांति और विपक्ष का 'शुतुरमुर्ग मोड'

जोगी और जूदेव के उस आक्रामक दौर के बाद, सूबे की सियासत पर जैसे एक लंबी खामोशी पसर गई। डॉ. रमन सिंह पूरे 15 साल मुख्यमंत्री रहे, लेकिन उनके सौम्य अंदाज़ के बीच विपक्ष मानो पूरी तरह शांत हो गया। इसके बाद साल 2018 में सत्ता बदली और भूपेश बघेल मुख्यमंत्री बने। उनके आते ही पासा ऐसा पलटा कि बीजेपी के तमाम बड़े और पूर्व मंत्री अचानक 'शुतुरमुर्ग' मोड में चले गए, यानी राजनीतिक रूप से पूरी तरह खामोश हो गए। मजे की बात यह है कि साल 2023 के चुनाव के बाद जब भूपेश बघेल खुद पूर्व मुख्यमंत्री हो गए, तब भी विधानसभा और गलियारों में सत्तापक्ष और विपक्ष के बीच वह पुरानी तीखी चिंगारी गायब ही दिख रही थी। ऐसा लगने लगा था कि छत्तीसगढ़ की राजनीति से वह पुरानी आक्रामकता अब हमेशा के लिए खत्म हो चुकी है।

दिल्ली दरबार का पासा और 440 वोल्ट का करंट

लेकिन राजनीति में कभी भी ठहराव स्थायी नहीं होता। दिल्ली आलाकमान ने एक ऐसा पासा फेंका जिसने छत्तीसगढ़ की सुस्त पड़ती सियासत में अचानक 440 वोल्ट का करंट दौड़ा दिया है। पूर्व केंद्रीय मंत्री और बीजेपी की सबसे प्रखर वक्ता स्मृति ईरानी को छत्तीसगढ़ का नया प्रदेश प्रभारी नियुक्त कर दिया गया है। इस एक फैसले ने छत्तीसगढ़ के सियासी गलियारों का पूरा मौसम बदल दिया है। अब बिसात पर सीन बिल्कुल साफ़ है,एक तरफ आक्रामक स्मृति ईरानी और दूसरी तरफ बेबाक भूपेश बघेल। इन दोनों का पुराना छत्तीसगढ़ कनेक्शन भी है। याद कीजिए साल 2023 का विधानसभा चुनाव, जब स्मृति ईरानी ने दिल्ली में बैठकर महादेव ऐप को लेकर भूपेश बघेल पर सीधे और तीखे हमले किए थे।

'घायल शेरनी' का बयान और परसेप्शन का खेल

जैसे ही स्मृति ईरानी के नाम का ऐलान हुआ, पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल का तुरंत एक तंज भरा बयान सामने आ गया। उन्होंने स्मृति ईरानी को 'घायल शेरनी' कह डाला। हालांकि, बीजेपी के रणनीतिकार अंदर ही अंदर मुस्कुराते हुए कह रहे हैं कि कांग्रेस शायद यह भूल रही है कि शेरनी जब घायल होती है, तो उसका हमला और ज्यादा आक्रामक हो जाता है। कांग्रेस ने भी सोशल मीडिया पर स्मृति ईरानी के पुराने धरनों के पोस्टर शेयर करके मोर्चा संभाल लिया है। कुल मिलाकर, छत्तीसगढ़ की राजनीति में अब 'नून-मिर्चा' पूरी तरह से लग चुका है।

24 घंटे में बदला परसेप्शन: सर्जिकल स्ट्राइक का असर

राजनीति में हकीकत से ज्यादा खेल 'परसेप्शन' यानी जनता के बीच बनी धारणा का होता है। बीजेपी के केंद्रीय नेतृत्व ने यह ऐसा साइलेंट सर्जिकल स्ट्राइक किया है कि महज 24 घंटे के भीतर पार्टी का परसेप्शन 'लो' से 'हाई' पर पहुंच गया। इस फैसले से ठीक एक दिन पहले तक खुद बीजेपी के अंदरूनी गलियारों में नेता दबी जुबान से मान रहे थे कि कार्यकर्ताओं में वह पुराना जोश नहीं है और साल 2028 का विधानसभा चुनाव जीतना इतना आसान नहीं होगा। लेकिन स्मृति ईरानी की एंट्री ने पूरे माहौल को अटैकिंग मोड में डाल दिया है। चौक-चौराहों और चाय की थड़ियों पर बैठा आम आदमी भी अब मान रहा है कि आने वाले दिनों में मुकाबला एकतरफा नहीं, बल्कि बराबरी का और बेहद दिलचस्प होगा। अब देखना यह है कि स्मृति ईरानी के इस सियासी चक्रव्यूह का तोड़ कांग्रेस आने वाले दिनों में कैसे निकालती है।

आंकड़ों के पीछे छुपी चिंता: छत्तीसगढ़ में मां और नवजात कितने सुरक्षित ?



• चंचल द्विवेदी, संवाददाता, रायपुर

एक तरफ आसमान छूने की कोशिश करता देश है, नई तकनीक है, बड़े-बड़े अस्पताल हैं और इलाज के नए रास्ते खुल रहे हैं। दूसरी तरफ छत्तीसगढ़ के किसी गांव में एक गर्भवती महिला प्रसव पीड़ा से जूझ रही है और परिवार इस इंतजार में है कि उसे समय पर अस्पताल पहुंचाने के लिए साधन मिल जाए। कहीं अस्पताल दूर है, तो कहीं अस्पताल तक पहुंचने के बाद इलाज के लिए इंतजार। यही अंतर कई बार जिंदगी और मौत के बीच की दूरी बन जाता है।

भारत के महापंजीयक कार्यालय की SRS रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 2022-24 में छत्तीसगढ़ में एक लाख जीवित जन्म पर 124 मातृ मृत्यु दर्ज की गई, यानी मां बनने की प्रक्रिया में हर एक लाख जीवित जन्म के पीछे औसतन 124 महिलाओं की जान गई। वहीं, वर्ष 2024 में प्रदेश की शिशु मृत्यु दर 36 प्रति हजार जीवित जन्म रही, इसका मतलब है कि हर एक हजार जीवित जन्म लेने वाले बच्चों में 36 बच्चे अपना पहला जन्मदिन देखने से पहले ही दुनिया से चले गए।

आंकड़े अपने आप में बहुत कुछ कहते हैं, लेकिन इनके पीछे की कहानी इससे भी बड़ी है। प्रसव के दौरान अत्यधिक रक्तस्राव, हाई ब्लड प्रेशर, संक्रमण और गर्भावस्था की गंभीर जटिलताएं मां के लिए जानलेवा बन सकती हैं। कई बार बीमारी की पहचान देर से होना और अस्पताल तक पहुंचने में लगने वाला समय खतरे को और बढ़ा देता है।

बच्चों के मामले में भी तस्वीर आसान नहीं है। समय से पहले जन्म, जन्म के समय कम वजन, सांस लेने में परेशानी और संक्रमण जैसी स्थितियां नवजात के लिए गंभीर खतरा बन सकती हैं। मां का कमजोर स्वास्थ्य और गर्भावस्था के दौरान पर्याप्त पोषण व जांच का अभाव भी बच्चे की सेहत पर असर डाल सकता है। मसलन, जिस मां को खुद समय पर पौष्टिक भोजन, जांच और इलाज नहीं मिलता, उसके बच्चे के लिए भी स्वस्थ शुरुआत आसान नहीं रहती।

सरकार इन चुनौतियों से निपटने के लिए जननी सुरक्षा योजना, जननी शिशु सुरक्षा कार्यक्रम, प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान और सुमन जैसी योजनाएं चला रही है। इनका मकसद गर्भवती महिलाओं की नियमित जांच से लेकर सुरक्षित प्रसव और मां-बच्चे को जरूरी स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना है।

दूर-दराज के इलाकों में डॉक्टरों की कमी दूर करने के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन ने 45 चिकित्सा अधिकारियों की पोस्टिंग भी की है। कोशिश है कि जिन इलाकों में डॉक्टर जाना पसंद नहीं करते, वहां भी इलाज की सुविधा पहुंचे और गर्भवती महिलाओं को छोटी-सी परेशानी के लिए लंबा सफर न करना पड़े।

लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू भी है, डॉक्टर अस्पताल में पहुंच जाएं, फिर भी अगर दवा, जांच, प्रशिक्षित स्टाफ, एंबुलेंस और आपातकालीन इलाज की व्यवस्था कमजोर रही, तो सिर्फ डॉक्टर की मौजूदगी कितनी दूर तक राहत दे पाएगी?

आखिर मां और बच्चे की जिंदगी सिर्फ एक डॉक्टर की पोस्टिंग से नहीं, पूरी स्वास्थ्य व्यवस्था के भरोसे से सुरक्षित होगी, तो सवाल यही है क्या सरकार अब उस पूरी व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में भी उतनी ही गंभीरता से आगे बढ़ रही है?

दिल्ली से रायपुर तक गरमाया सियासी पारा - मुख्य चुनाव आयुक्त के इस्तीफे और SIR विवाद पर कांग्रेस का उग्र प्रदर्शन





इन दिनों देश की राजनीति में 'विशेष गहन पुनरीक्षण' (SIR) प्रक्रिया और मतदाता सूची से नाम काटे जाने का विवाद एक बड़ा राष्ट्रीय मुद्दा बन गया है। चुनाव प्रणाली की पारदर्शिता पर खड़े हो रहे गंभीर सवालों के बीच मुख्य चुनाव आयुक्त (CEC) ज्ञानेश कुमार के कामकाज के खिलाफ आक्रोश देश की राजधानी दिल्ली से लेकर छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर तक उग्र रूप ले चुका है। दिल्ली के जंतर-मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी (CJP) और कांग्रेस के तीखे विरोध तथा नेताओं की गिरफ्तारियों के बाद अब इसकी आंच छत्तीसगढ़ तक पहुंच गई है। राजधानी रायपुर के अंबेडकर चौक पर कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं ने भारी संख्या में पहुंचकर जोरदार प्रदर्शन किया और आज के दिन को 'काला दिवस' के रूप में मनाया।

इस दौरान जब मीडिया ने प्रदर्शनकारी नेताओं से सवाल किए, तो उन्होंने कुछ इस तरह से अपने जवाब दिए:-

1. पत्रकार का सवाल
आप आज यहां प्रदर्शन क्यों कर रहे हैं?
नेताओं/प्रदर्शनकारियों का जवाब
"ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर हम यहां पहुंचे हैं, और पिछले दो दिनों में राहुल गांधी के नाम पर जो एफआईआर हुई है, उसके विरोध में हम आज यहां पहुंचे हैं और आज के इस दिन को हम काला दिवस के रूप में मना रहे हैं। 21 राज्यों में बीजेपी की सरकार वोट चोरी करके बनी है। ज्ञानेश कुमार का सिर्फ इस्तीफा नहीं, उन्हें जेल और फांसी होनी चाहिए।"

2. पत्रकार का सवाल
प्रदर्शन कर रहे बच्चों पर भी लाठीचार्ज हुई, इस पर क्या कहना है?
नेताओं/प्रदर्शनकारियों का जवाब
देश में लोकतंत्र पूरी तरह खत्म हो चुका है। अंग्रेजों के गुलाम भारत जैसा माहौल है। जैसे 1947 में गांधी जी ने देश को आजादी दिलाई थी, वैसे ही राहुल गांधी इस गुलाम भारत को आजाद कराएंगे।

3. पत्रकार का सवाल
आप काले झंडे लेकर बैठे हैं, यह किसका प्रतीक है?
नेताओं/प्रदर्शनकारियों का जवाब
आज 'इंडिया गठबंधन' देश भर में काला दिवस मना रहा है। 13 करोड़ से ज्यादा लोगों के नाम बीजेपी और चुनाव आयुक्त मिलकर काट रहे हैं। जब तक ज्ञानेश कुमार इस्तीफा नहीं देंगे, कांग्रेस यह लड़ाई लड़ती रहेगी।

4. पत्रकार का सवाल
लगातार लंबे समय से वोट चोरी के आरोप लगाए जा रहे हैं, तो अब यह प्रदर्शन क्यों?
नेताओं/प्रदर्शनकारियों का जवाब
यह सिर्फ आरोप नहीं, वोट चोरी प्रमाणित हो रही है। सुप्रीम कोर्ट की अनुमति के बिना फॉर्म-6 में बदलाव कर 13 करोड़ से अधिक लोगों के नाम काटे गए हैं। चुनाव आयोग पूरी तरह सत्ताधारी पार्टी के इशारे पर काम कर रहा है।

5. पत्रकार का सवाल
क्या ऐसे प्रदर्शन करने से ज्ञानेश कुमार इस्तीफा दे देंगे?
नेताओं/प्रदर्शनकारियों का जवाब
अकेले रायपुर में 25 हजार और देश भर में करोड़ों नाम काटे गए हैं। चुनाव आयोग के अन्य आयुक्तों ने भी 14 बार ज्ञानेश कुमार के निर्णयों पर आपत्ति जताई है। नए मतदाताओं के अधिकार छीने जा रहे हैं, इसलिए अपनी इज्जत बचाने के लिए उन्हें खुद इस्तीफा दे देना चाहिए।

दिल्ली से लेकर रायपुर तक सड़क पर उतरे नेताओं और कार्यकर्ताओं के इन तीखे तेवरों ने यह साफ कर दिया है कि चुनाव आयोग की कार्यप्रणाली और मतदाता सूची विवाद पर यह सियासी संघर्ष अभी और तेज होने वाला है।

₹3,100 का धान: चुनावी जुमला या किसान की पासबुक का सच ? सेमरिया गांव से विशेष जमीनी पड़ताल

रिकॉर्ड 149 लाख टन की खरीदी के बीच खातों में उतरी 'मोदी की गारंटी': किश्तों में ही सही, पर किसानों को मिला पूरा दाम, लाइव पासबुक ने खोली दावों की हकीकत

• **आरती बेनिया,** संवाददाता, रायपुर

छत्तीसगढ़ में 16 नवंबर से धान खरीदी का नया सीजन शुरू होने जा रहा है। ऐसे में यह सवाल उठना लाज़मी है कि क्या पिछले सीजनों में किए गए सरकारी वादे केवल कागज़ों तक सीमित रहे या वे किसानों की झोली तक पहुँचे? इस चुनावी घोषणा और जमीनी हकीकत का सच जानने के लिए जब हमारी टीम ने रायपुर के ग्रामीण अंचल सेमरिया गांव का रुख किया, तो राजनीति के बंद कमरों के दावों से इतर एक बेहद पारदर्शी और सकारात्मक तस्वीर सामने आई।



घोषणापत्र का वादा हुआ पूरा, पर दो चरणों में मिला पैसा

सेमरिया गांव की गलियों और खेतों में जब हमने दर्जनों किसानों से वन-टू-वन बातचीत की, तो उन्होंने बेबाकी से अपनी राय रखी। गांव के अनुभवी किसानों ने ऑन-कैमरा और ऑन-रिकॉर्ड यह स्वीकार किया कि भाजपा के संकल्प पत्र में किया गया ₹3,100 प्रति क्विंटल धान का वादा जमीनी स्तर पर पूरी तरह सच साबित हुआ है।

हालांकि, इस भुगतान की प्रक्रिया को लेकर शुरुआत में किसानों के बीच थोड़ा भ्रम ज़रूर था। पड़ताल में सामने आया कि धान बेचने पर किसानों के खातों में एकमुश्त ₹3,100 नहीं आए। पहले चरण में केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) यानी लगभग ₹2,300 की राशि ट्रांसफर की गई। इसके बाद, राज्य सरकार ने अपनी 'कृषक उन्नति योजना' के तहत अंतर की राशि (लगभग ₹800 प्रति क्विंटल का बोनस) इनपुट सब्सिडी के रूप में किसानों के बैंक खातों में सीधे ट्रांसफर (DBT) की।

लाइव पासबुक ने दूर किया भ्रम

इस खोजी रिपोर्ट के दौरान जब हमने किसानों की बैंक पासबुक को लाइव देखा, तो दूध का दूध और पानी का पानी हो गया। पासबुक की एंट्रियां गवाही दे रही थीं कि किश्तों के अंतराल में ही सही, लेकिन ₹3,100 का पूरा गणित किसानों के खाते में साफ तौर पर दर्ज है। किसानों का कहना है कि भले ही पैसा दो टुकड़ों में आया, लेकिन एक बड़ा और एकमुश्त बोनस मिलने से उन्हें खेती के नए उपकरणों, ट्रैक्टर की किश्तें चुकाने और बच्चों की उच्च शिक्षा व शादियों के लिए बहुत बड़ा आर्थिक सहारा मिला है।

ऐतिहासिक आंकड़ों की ज़मीनी गवाही

गौरतलब है कि पिछले सीजन में छत्तीसगढ़ सरकार ने प्रदेश के इतिहास की सबसे बड़ी 149.25 लाख मीट्रिक टन की रिकॉर्ड धान खरीदी दर्ज की थी। इस ऐतिहासिक नीति से राज्य के 24.72 लाख से अधिक किसान सीधे लाभान्वित हुए, और ₹31,000 करोड़ से ज़्यादा की भारी-भरकम राशि सीधे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में पंप की गई। सेमरिया गांव के किसानों की खुशहाली और उनके खर्च करने की क्षमता में आया उछाल इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि यह डेटा महज़ एक सरकारी आंकड़ा नहीं, बल्कि ग्रामीण विकास की नई इबारत है।

पहले की व्यवस्थाओं में जहाँ किश्तों के लिए लंबा इंतज़ार करना पड़ता था, वहीं वर्तमान में 'कृषक उन्नति योजना' की अंतर राशि ने किसानों का हौसला और सरकार पर भरोसा दोनों बढ़ाया है। आगामी 16 नवंबर से शुरू हो रहे नए सीजन और प्रति एकड़ 21 क्विंटल खरीदी के नियम को लेकर सेमरिया के किसानों में भारी उत्साह है। कुल मिलाकर, ₹3,100 का यह धान दांव कोई चुनावी 'जुमला' नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ के अन्नदाताओं की पासबुक में दर्ज एक ऐतिहासिक उपलब्धि साबित हुआ है।

महतारी वंदन योजना - छत्तीसगढ़ की महिलाओं के लिए वरदान या सिर्फ औपचारिकता ?

• **चंचल द्विवेदी,** संवाददाता, रायपुर

जब-जब चुनाव आते हैं, हर राजनीतिक पार्टी अपने घोषणापत्र में तमाम लुभावने वादे करती है। जनता से यह वादा किया जाता है कि उनकी सरकार बनने पर जनहित की कई योजनाएं चलाई जाएंगी। इसी कड़ी में छत्तीसगढ़ के 2024 के विधानसभा चुनावों के दौरान भारतीय जनता पार्टी (BJP) ने कई बड़े वादे किए थे, जिसमें सबसे ज्यादा ध्यान आकर्षित करने वाला और सबसे महत्वाकांक्षी वादा था महतारी वंदन योजना इस योजना के तहत राज्य की पात्र महिलाओं को हर महीने उनके बैंक खातों में 1,000 रुपये (यानी सालाना 12,000 रुपये) की आर्थिक सहायता देने का वादा किया गया था।

छत्तीसगढ़ में चुनाव जीतने के बाद बीजेपी सरकार ने इस वादे को अमलीजामा पहनाया और 1 मार्च 2024 को इस योजना की औपचारिक शुरुआत हुई। इसके बाद 10 मार्च 2024 को सरकार द्वारा योजना की पहली किस्त जारी कर महिलाओं के खातों में पैसे भेजे गए। तब से लेकर अब तक यह योजना निरंतर आगे बढ़ रही है।

शुरुआत से लेकर अक्टूबर 2026 तक इस योजना के तहत कुल 32 किस्तें जारी की जा चुकी हैं। हाल ही में 8 अक्टूबर 2026 को जारी की गई 32वीं किस्त के माध्यम से प्रदेश की 67 लाख 38 हजार 217 महिलाओं के बैंक खातों में 632 करोड़ 40 लाख रुपये से अधिक की राशि सीधे अंतरित (DBT) की गई। इस प्रकार, योजना के शुरू होने से लेकर अब तक कुल वितरित राशि 20 हजार 708 करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर चुकी है।

जब हमने मैदान में उतरकर महिलाओं से यह जानने की कोशिश की कि इस राशि का असल में कहां और कैसे इस्तेमाल हो रहा है, तो उन्होंने अपने अनुभव खुलकर साझा किए -



सवाल:- महतारी वंदन की राशि मिलने से क्या कोई बदलाव आया है जीवन में ?

जवाब:- हाँ, मैं एक बुजुर्ग हूँ, लेकिन मुझे काम करना पड़ता था, अब नहीं करना पड़ता। अब मैं घर पे रहती हूँ और महतारी वंदन के पैसों से घूमने भी चली जाती हूँ - वृंदावन-जगन्नाथपुरी गए हैं।



सवाल:- आप किन चीजों में उपयोग करती हैं महतारी वंदन के पैसे का ?

जवाब:- रोजमर्रा में उपयोग होने वाली चीजों के लिए करती हूँ, गोली-बिस्कुट और घर में कोई बच्चे आ जाए तो मेहमानों को देने के लिए। अब किसी से मांगना नहीं पड़ता।



सवाल:- आपको मिलता है महतारी वंदन का पैसा, क्या -क्या उपयोग करते हैं इन रकम का ?

जवाब:- हाँ, मिलता है, स्थिति के अनुसार उपयोग करते हैं सब कुछ सही रहता है तो बेटी के सुकन्या अकाउंट में जमा करा देते हैं और कभी-कभी घर के खर्च निकल जाते हैं , मदद हो जाती है1



सवाल:- जब घोषणा की जा रही थी बीजेपी द्वारा कि महतारी वंदन लाया जाएगा, तो क्या आपको यकीन था कि कुछ इस तरह हो सकता है, पैसे सीधे अकाउंट में आ सकते हैं ?

जवाब:- शुरू में तो लगा कि ऐसा शायद ही होगा, पर जब आया तो बहुत खुशी हुई।

भले ही राजनीतिक मंचों पर इन योजनाओं को लेकर तमाम तरह की बहसें होती हों, लेकिन मैदानी हकीकत यह बयां करती है कि छत्तीसगढ़ की महिलाओं के लिए महतारी वंदन योजना का यह एक हजार रुपया मात्र एक छोटी सी राशि नहीं है। थोड़ी ही सही, लेकिन इस आर्थिक मदद से महिलाओं के चेहरे पर मुस्कान आ रही है और वे अपने जीवन में वित्तीय आत्मनिर्भरता का अनुभव कर रही हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि यदि सही समय पर धरातल पर वादे निभाए जाएं, तो आम जनता के जीवन में सकारात्मक बदलाव जरूर आते हैं।

CGPSC घोटाला: 60-65 लाख में बिके थे पद

मैरिज पैलेस से लेकर रिसॉर्ट तक चला था पेपर रटवाने का खेल




टामन सिंह सोनवानी


श्रवण गोयल


ललित गणवीर


उत्कर्ष चंद्राकर


डॉ. विकास चंद्रकर


चेतन बोरघरिया

• **राकेश निर्मलकर,** संवाददाता, रायपुर

रायपुर। छत्तीसगढ़ लोक सेवा आयोग (CGPSC) की राज्य सेवा परीक्षा में हुए बहुचर्चित घोटाले और पेपर लीक मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ED) और CBI की जांच से चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं। ईडी ने इस मामले में तत्कालीन चेयरमैन टामन सिंह सोनवानी समेत 7 आरोपियों के खिलाफ अपनी पहली चार्जशीट दाखिल कर दी है। जांच में सामने आया है कि राज्य सेवा के बड़े पदों के लिए 60 से 65 लाख रुपये तक में सौदा तय किया गया था और अभ्यर्थियों को प्रारंभिक परीक्षा (प्रीलिम्स) से लेकर इंटरव्यू तक चयन की गारंटी दी गई थी।

कैसे शुरू हुआ विवाद और क्या था पूरा घटनाक्रम?

विज्ञापन से रिजल्ट तक: सीजीपीएससी द्वारा 171 पदों (डिप्टी कलेक्टर, डीएसपी आदि) के लिए विज्ञापन जारी किया गया था। फरवरी 2022 में प्रीलिम्स और मई 2022 में मुख्य परीक्षा (मेंस) आयोजित हुई। एक पद के पीछे तीन अभ्यर्थियों के नियम के तहत 509 लोगों को इंटरव्यू के लिए बुलाया गया और 11 मई 2023 को फाइनल रिजल्ट जारी हुआ।

रिजल्ट आते ही गहराया शक: रिजल्ट घोषित होते ही हड़कंप मच गया क्योंकि टॉप की सूची में अधिकारियों, नेताओं और रसूखदार कारोबारियों के बच्चों व रिश्तेदारों के नाम शामिल थे। सबसे बड़ा विवाद तब खड़ा हुआ जब पता चला कि कुछ चयनित अभ्यर्थियों के नाम के आगे से 'सरनेम' गायब थे, ताकि उनकी पहचान छुपाई जा सके।

दो बड़े नेटवर्क के जरिए चला पूरा खेलजांच के अनुसार यह घोटाला दो समानांतर नेटवर्क के माध्यम से अंजाम दिया गया:

1. पहला नेटवर्क: चेयरमैन का परिवार और NGO के जरिए पैसों का खेलपरिवार के 5 लोगों का चयन: तत्कालीन अध्यक्ष टामन सिंह सोनवानी के परिवार से ही 5 लोगों का बड़े पदों पर चयन हुआ। इनमें बेटा नितेश और बड़े भाई का बेटा साहिल (दोनों के सरनेम रिजल्ट में नहीं दिखे, डीएसपी व डिप्टी कलेक्टर पद पर चयन), बहू निशा कोसले (डिप्टी कलेक्टर), भाई की बहू दीपा आदिल (जिला आबकारी अधिकारी) और बहन की बेटी सुनीता जोशी (श्रम अधिकारी) शामिल थीं। CSR फंड की आड़ में 45 लाख की रिश्वत: इस खेल में तत्कालीन उप परीक्षा नियंत्रक ललित गणवीर ने मुख्य भूमिका निभाई। ललित गणवीर आयोग में पद पर रहते हुए सोनवानी की पत्नी द्वारा संचालित एनजीओ 'ग्रामीण विकास समिति' का कोषाध्यक्ष भी था। बजरंग इस्पात के डायरेक्टर श्रवण गोयल ने अपने बेटे शशांक गोयल और बहू भूमिका कटियार को पास कराने के लिए सीएसआर (CSR) फंड की आड़ में इस एनजीओ के खाते में 45 लाख रुपये ट्रांसफर किए और बदले में उन्हें प्रश्नपत्र मुहैया कराया गया।

2. दूसरा नेटवर्क: 60-65 लाख में सौदा और रिसॉर्ट में पेपर की तैयारी

सत्ता और रसूख का इस्तेमाल: दूसरे सिंडिकेट में पूर्व मुख्यमंत्री कार्यालय (CMO) के तत्कालीन ओएसडी चेतन बोरघरिया, तत्कालीन मुख्यमंत्री के पीए केके चंद्रवंशी का भतीजा उत्कर्ष चंद्राकर, तुमगांव के मेडिकल ऑफिसर डॉ. विकास चंद्राकर और अनिल चंद्राकर (उत्कर्ष का जीजा) शामिल थे। इन्होंने सत्ता तक अपनी पहुंच का हवाला देकर अभ्यर्थियों का भरोसा जीता। मैरिज पैलेस से रिसॉर्ट तक का सफर: इस गिरोह ने प्रति पोस्ट 60 से 65 लाख रुपये में सौदा किया। डॉ. विकास चंद्राकर ने ग्राहक (अभ्यर्थी) खोजने और अनिल चंद्राकर ने पैसों के प्रबंधन का काम किया। सबसे पहले प्रीलिम्स परीक्षा से ठीक एक दिन पहले रायपुर के रिंग रोड-1, डीडी नगर स्थित 'सिद्धि विनायक मैरिज पैलेस' में करीब 30 अभ्यर्थियों को बुलाकर प्रश्नपत्र उपलब्ध कराया गया।

बारनवापारा रिसॉर्ट में एक महीने तक रटवाया पेपर: जब ये अभ्यर्थी प्रीलिम्स पास कर गए, तो मुख्य परीक्षा (मेंस) से एक महीने पहले रायपुर में भंडाफोड़ होने के डर से 29 से ज्यादा अभ्यर्थियों को बारनवापारा के एक रिसॉर्ट में ठहराया गया। वहां उन्हें लीक किया हुआ प्रश्नपत्र देकर एक महीने तक उत्तर रटवाए गए। (उत्कर्ष चंद्राकर ने अपनी सगी बहन को भी इसी तरह पास करवाया)। हालांकि, मेंस का रिजल्ट आने पर जब पैसे देने वाले कुछ अभ्यर्थी पास नहीं हो पाए, तो उन्होंने हंगामा कर दिया जिसे गिरोह ने किसी तरह शांत कराया।

होटल और रेसॉर्ट में सुआ सारा खेल

7 आरोपियों पर ईडी की चार्जशीट: ईडी ने अपनी पहली चार्जशीट में तत्कालीन चेयरमैन टामन सिंह सोनवानी, पूर्व सीएमओ ओएसडी चेतन बोरघरिया, उप परीक्षा नियंत्रक ललित गणवीर, डॉ. विकास चंद्राकर, उत्कर्ष चंद्राकर, अनिल चंद्राकर और निजी कंपनी के डायरेक्टर श्रवण गोयल को आरोपी बनाया है। इनमें से टामन सोनवानी, श्रवण गोयल और ललित गणवीर की गिरफ्तारी हो चुकी है।

3 करोड़ का सुराग, 17.4 करोड़ का अनुमान: बारनवापारा के रिसॉर्ट में 18 नहीं बल्कि 29 से ज्यादा अभ्यर्थी पहुंचे थे। यदि प्रति अभ्यर्थी 60 लाख रुपये के हिसाब से देखा जाए तो यह रकम 17.4 करोड़ रुपये बैठती है। हालांकि, ईडी को अब तक करीब 3 करोड़ रुपये से अधिक (लगभग 5 सीटों के सौदे के बराबर) के नकद लेन-देन के पुख्ता साक्ष्य मिले हैं और बाकी रकम व कड़ियों की जांच जारी है।

3 करोड़ का सुराग, 17.4 करोड़ का अनुमान: बारनवापारा के रिसॉर्ट में 18 नहीं बल्कि 29 से ज्यादा अभ्यर्थी पहुंचे थे। यदि प्रति अभ्यर्थी 60 लाख रुपये के हिसाब से देखा जाए तो यह रकम 17.4 करोड़ रुपये बैठती है। हालांकि, ईडी को अब तक करीब 3 करोड़ रुपये से अधिक (लगभग 5 सीटों के सौदे के बराबर) के नकद लेन-देन के पुख्ता साक्ष्य मिले हैं और बाकी रकम व कड़ियों की जांच जारी है।

1. पीड़ित अभ्यर्थी का दर्द (जिन्होंने उस समय इंटरव्यू दिया था):

मानसिक तनाव और डिप्रेशन: परीक्षा और इंटरव्यू दिला चुके अभ्यर्थी ने अपनी पीड़ा बताते हुए कहा कि सीजीपीएससी की प्रक्रिया खुद एक साल लंबी होती है, जिसके पीछे छात्र 4-5 साल तक कड़ी मेहनत करते हैं।

परिवार और समाज का दबाव: उन्होंने बताया कि जब एक अभ्यर्थी को पूरा भरोसा हो कि उसका चयन होने वाला है और तभी धांधली या पेपर लीक जैसी खबरें आ जाएं, तो छात्र गहरे डिप्रेशन में चले जाते हैं। परिवार और दोस्तों को जवाब देने के लिए कोई शब्द नहीं बचते जो यह उम्मीद लगाए बैठे रहते हैं कि उनका बेटा अफसर बनेगा।

2. मनोज वैष्णव (तत्कालीन प्रदेश मंत्री, ABVP - जिन्होंने मामले का सबसे पहले खुलासा किया):

कैसे पकड़ी गई गड़बड़ी: मनोज वैष्णव ने बताया कि 11 मई 2023 को रिजल्ट आने के मात्र दो दिन बाद ही उन्हें और उनकी टीम को शंका हुई। हर साल पीएससी में कोई न कोई गरीब परिवार का छात्र टॉप करता था, लेकिन इस बार टॉप-1 से टॉप-20 तक सभी नाम अधिकारियों, नेताओं और व्यापारियों के बच्चों के थे।

चरणबद्ध आंदोलन और 11 हजार छात्रों का प्रदर्शन: अध्ययन में पेपर लीक और भाई-भतीजावाद की बात सामने आने पर एबीवीपी ने पहले रायपुर कलेक्टर और फिर प्रदेश भर के कलेक्टरों को ज्ञापन सौंपा। तत्कालीन मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के 'युवा संवाद' कार्यक्रम में भी बात रखने की कोशिश की गई। जब कोई सुनवाई नहीं हुई, तो 6 अक्टूबर 2023 को रायपुर में करीब 11,000 विद्यार्थियों के साथ प्रदेश स्तरीय विशाल आंदोलन किया गया।

तीन प्रमुख मांगें: इस आंदोलन में तीन मुख्य मांगें रखी गई थीं- 1. पूरे मामले की CBI जैसी उच्च स्तरीय जांच हो, 2. दोषियों पर कठोर कार्रवाई हो, और 3. संदिग्ध चयनित उम्मीदवारों की नियुक्ति पर रोक लगे। बाद में 2024 में बनी विष्णु देव साय की नई सरकार ने अपनी पहली ही कैबिनेट बैठक में इस मामले की CBI जांच का निर्णय लिया।

छत्तीसगढ़ के माटीपुत्र का राष्ट्रीय मंच पर जलवा!

लड़के ने फीमेल वॉइस में गाया गाना और जीत लिया देश का दिल



• **राकेश निर्मलकर,** संवाददाता, रायपुर

छत्तीसगढ़ की माटी में कला और प्रतिभा की कोई कमी नहीं है। जब भी यहाँ के कलाकारों को राष्ट्रीय मंच मिलता है, वे अपनी अनूठी छाप छोड़कर पूरे प्रदेश का मान बढ़ाते हैं। इसी कड़ी में आजकल छत्तीसगढ़ के रहने वाले सचिन सोनवानी का नाम पूरे देश में गूंज रहा है। सचिन को यह अनोखा वरदान प्राप्त है कि वे पुरुष और महिला दोनों की आवाजों में बेहद सुरीले अंदाज में गाना गा सकते हैं।

हाल ही में प्रसिद्ध कॉमेडियन समय रैना के चर्चित शो 'इंडियाज गॉट लेटेंट' (India's Got Latent) में सचिन ने शिरकत की, जहाँ बॉलीवुड अभिनेता आयुष्मान खुराना भी मुख्य अतिथि के रूप में मौजूद थे। इस मंच पर सचिन ने अपनी फीमेल वॉइस (महिला आवाज) से ऐसा समां बांधा और समय रैना व आयुष्मान खुराना के साथ जो मजेदार जुगलबंदी और हंसी-ठिठोली की, उसका वीडियो सोशल मीडिया पर आग की तरह फैल गया। दोनों की 'ड्रीम गर्ल' वाली आवाज में बातचीत और गानों की मस्ती ने इंटरनेट पर खूब चर्चा बटोरी।

इसी शानदार उपलब्धि के बाद 'ठीहा छत्तीसगढ़' ने सचिन सोनवानी से खास बातचीत की। इस इंटरव्यू में पूछे गए प्रमुख सवाल और उनके जवाब नीचे विस्तार से दिए गए हैं:-

1. सवाल: आपकी उम्र क्या है और गायकी का यह सफर कब और कैसे शुरू हुआ? आपने फीमेल वॉइस में गाना कब से शुरू किया?

जवाब: सचिन ने बताया कि उनकी उम्र 26 साल है। उनके परिवार में कोई गायक नहीं था, लेकिन उनकी माँ रेडियो पर खूब गाने सुनती थीं। वहीं से उन्हें भी गुनगुनाने का शौक लगा। सात-आठ साल की उम्र में फिल्म 'दिल्ली-6' का 'मसकली' गाना वे मेल वॉइस में खूब गाते थे। इसके बाद जब वे आठवीं कक्षा में (लगभग 12-13 साल की उम्र में) पहुंचे, तब उन्होंने स्कूल में पहली बार फीमेल वॉइस में गाना गाया और वहीं से इस खास कला की शुरुआत हुई।

2. सवाल: आप 'इंडियाज गॉट लेटेंट' के मंच और मुंबई तक कैसे पहुंचे? क्या इसके लिए कोई शुल्क या फॉर्म की फीस लगी?

जवाब: सचिन ने बताया कि सोशल मीडिया पर एक विज्ञापन देखकर उन्होंने 'हाय' लिखकर मैसेज किया था। इसके बाद शो की टीम से कॉल आया और पूछा गया कि क्या वे शो देखते हैं और मुंबई आने के इच्छुक हैं। एक छोटे से गाँव के लड़के के लिए मुंबई जाना बड़ी बात थी, इसलिए उन्होंने तुरंत हाँ कर दी। जुलाई में उनका वीडियो कॉल और ज़ूम मीटिंग के ज़रिए ऑडिशन हुआ। सिलेक्ट होने के बाद उन्हें मुंबई बुलाया गया। इसके लिए उनकी जेब से एक रुपया भी खर्च नहीं हुआ; आने-जाने, रहने और खाने का सारा खर्च शो की टीम ने ही उठाया।

3. सवाल: शो में जाने से पहले क्या आपको पता था कि वहां आयुष्मान खुराना आने वाले हैं?

जवाब: नहीं, शो की टीम ने इसे पूरी तरह सस्पेंस रखा था। उन्हें सिर्फ इतना बताया गया था कि जिस तारीख को उन्हें बुलाया जा रहा है, उस दिन का पैनल उनके टैलेंट के हिसाब से एकदम उपयुक्त और शानदार होगा। लोकेशन (हैबिटेट, खार स्टेशन के पास) पर पहुंचने के बाद ही उन्हें पता चला कि सामने आयुष्मान खुराना होने वाले हैं।

4. सवाल: शो में आपने कौन सा गाना गाया और उसकी तैयारी कैसे की थी?



जवाब: सचिन ने बताया कि कॉपीराइट नियमों की वजह से शो में कोई भी बॉलीवुड हिंदी गाना गाने की मनाही थी। उन्होंने सोचा कि वे अपना खुद का छत्तीसगढ़ी एल्बम सॉन्ग 'गोंदा फूल की जान मारे ना' गाएंगे। लेकिन टीम ने कहा कि वहां 18-19 साल के युवा (Gen-Z) दर्शक बैठे होंगे, जिन्हें छत्तीसगढ़ी भाषा समझने में दिक्कत होगी। इसके बाद सचिन ने अपने उसी छत्तीसगढ़ी गाने को हिंदी में ट्रांसलेट करके "तुझको ही अपना बनाऊंगी सजना पास आओ ना... बेबी मान जाओ ना" बनाया और मंच पर प्रस्तुत किया।

5. सवाल: आयुष्मान खुराना के साथ आपकी जो बातचीत और 'उड़ता तीर' वाली लाइन वायरल हुई, क्या वह पहले से स्क्रिप्टेड थी?

जवाब: सचिन ने स्पष्ट किया कि शो में कुछ भी स्क्रिप्टेड नहीं होता, सब कुछ अनफिल्टर्ड और ऑन-द-स्पॉट होता है। शो शुरू होने से पहले समय रैना ने आकर सभी प्रतिभागियों को सहज किया था कि बिना डरे खुलकर बात करें। मंच पर जब सचिन ने गाया, तो आयुष्मान खुराना ने अपनी फिल्म 'ड्रीम गर्ल' वाली असली लड़की की आवाज में कहा- "बेबी मत गाओ ना"। सचिन यह देखकर चौंक गए कि फिल्म में आयुष्मान की आवाज डब नहीं थी बल्कि असली थी। इसके जवाब में सचिन ने आयुष्मान की शर्ट पर लिखे शब्द 'उड़ता तीर' को देखकर तुरंत गाते हुए जवाब दिया- "मैं तो गाऊंगी रे, उड़ता तीर ले लूंगी मैं गाऊंगी रे"। इस पर समय रैना, आयुष्मान और पूरे ऑडियंस ने खूब ठहाके लगाए और माहौल बन गया।

6. सवाल: क्या आप इस शो के विजेता भी रहे और इनाम में आपको क्या-क्या मिला?

जवाब: हाँ, उस एपिसोड में सचिन के साथ कुल तीनप्रतिभागी विजेता बने (एक मलखंब कलाकार और एक स्टैंडअप कॉमेडियन)। 1 लाख रुपये की इनामी राशि तीनों में बराबर बांटी गई, जिसमें सचिन के हिस्से में लगभग 33,000 रुपये आए। इसके अलावा उन्हें स्पॉन्सर की तरफ से एक 'AI+ Nova' स्मार्टफोन और 'वाइल्ड स्टोन' का परफ्यूम गिफ्ट में मिला।

7. सवाल: एक लड़का होकर लड़की की आवाज में गाने पर समाज और परिवार की क्या प्रतिक्रिया रही? क्या कभी तानों का सामना करना पड़ा?

जवाब: सचिन ने अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए बताया कि शुरुआत में रिश्तेदार और घरवाले इसके सख्त खिलाफ थे। लोग तरह-तरह के ताने मारते थे, मज़ाक उड़ाते थे और यहाँ तक कि किन्नर या ट्रांसजेंडर समुदाय का नाम लेकर चिढ़ाते भी थे। घरवालों के दबाव और तानों से तंग आकर उन्होंने 12वीं और आईटीआई (इलेक्ट्रीशियन) करने के बाद गाना छोड़ दिया और झारखंड में 9 से 5 की नौकरी करने चले गए। लेकिन वहां उन्हें लगा कि ईश्वर का दिया हुआ उनका यह हुनर बर्बाद हो रहा है। वे नौकरी छोड़कर वापस लौटे और छुप-छुपकर प्रतियोगिताओं में भाग लेने लगे। साल 2023 में 'वॉइस ऑफ रायगढ़' प्रतियोगिता में 100 प्रतिभागियों को पछाड़कर जब उन्होंने पहला इनाम जीता, तब से लोगों का नजरिया बदला और ताने तारीफों में बदल गए।

8. सवाल: इससे पहले आप 'इंडियन आइडल' के मंच पर भी गए थे, वहां श्रेया घोषाल के साथ आपका अनुभव कैसा रहा?

जवाब: साल 2025 में 'इंडियन आइडल सीजन 16' में भी उन्हें अपनी फीमेल वॉइस की वजह से ही जाने का मौका मिला था। वहां जज के रूप में श्रेया घोषाल, बादशाह और विशाल ददलानी बैठे थे। जब सचिन ने ऑडिशन में 'हवा हवाई' गाना गाया, तो श्रेया घोषाल इतनी प्रभावित हुईं कि अपनी सीट से उठकर मंच पर उन्हें गले लगाने आ गईं। श्रेया जी को अपने इतने करीब देखकर सचिन घबराहट के मारे पसीना-पसीना हो गए थे। इसके बाद उन्होंने श्रेया घोषाल के साथ ही उनका प्रसिद्ध गाना 'ऊ लाला' डुएट (मेल और फीमेल दोनों आवाज) में गाया।

9. सवाल: बॉलीवुड और छत्तीसगढ़ी संगीत में आपके पसंदीदा गायक कौन हैं?

जवाब: बॉलीवुड में सचिन की सबसे पसंदीदा गायिका अलका याग्निक और कविता कृष्णमूर्ति हैं। शो और कार्यक्रमों में लोग उनसे अलका याग्निक के गानों की ही सबसे ज्यादा फरमाइश करते हैं। वहीं छत्तीसगढ़ी संगीत में वे 'जसगीत की क्वीन' कही जाने वाली अलका चंद्राकर, कंचन जोशी और चंपा निषाद को बहुत पसंद करते हैं। उनकी दिली ख्वाहिश है कि वे एक बार अलका चंद्राकर जी से रूबरू मिलें।

नवरात्रि २०२६

• आरती बेनिया, संवाददाता, रायपुर

शारदीय नवरात्रि के पावन अवसर पर रायपुर के गुढ़ियारी स्थित पहाड़ी चौक में इस बार आस्था और कला का अद्भुत संगम देखने को मिल रहा है। पहाड़ी चौक से थोड़ी-थोड़ी दूरी पर तीन बेहद अनोखी और भव्य प्रतिमाएं स्थापित की गई हैं, जो हर आने-जाने वाले का ध्यान अपनी ओर खींच रही हैं।



पहली झांकी: छत्तीसगढ़ी ग्रामीण संस्कृति और जेठौनी उत्सव

पहाड़ी चौक के पास सजे पहले पंडाल में छत्तीसगढ़ के पारंपरिक ग्रामीण जीवन और जेठौनी (देवउठनी एकादशी) के माहौल को जीवंत किया गया है। यहाँ का बैकग्राउंड मिट्टी के घर और खपरैल की छत जैसा बनाया गया है, जिसकी दीवारों पर पारंपरिक मांडने और चौक (अल्पना) उकेरे गए हैं। जेठौनी की थीम होने के कारण माता रानी के सामने नीले रंग का एक सुंदर 'तुलसी चौरा' स्थापित है, जिसके ऊपर ताजे गन्नों का मंडप बांधा गया है। माता की मूर्ति के पास ही पारंपरिक लुगरा पहने ग्रामीण महिलाओं और लोक-उत्सव मनाते लोगों के सजीव पुतले खड़े किए गए हैं।



दूसरी झांकी: मांदर की थाप पर थिरकता छत्तीसगढ़

इससे थोड़ी ही दूरी पर बनी दूसरी झांकी में छत्तीसगढ़ के पारंपरिक संगीत और लोक-नृत्यों को मूर्तियों के ज़रिए बहुत ही सुंदर तरीके से दिखाया गया है। यहाँ पीले कुर्ते, काली जैकेट और लाल धोती पहने ग्रामीण पुरुषों के पुतले खड़े हैं, जिनके सिर पर मोर पंख लगी पगड़ी बंधी है और वे गले में मांदर व ढोल लटकाए हुए हैं। पास में ही धोती पहने एक छोटे बच्चे की मूर्ति है जो हाथ में सजी हुई लाठी लेकर सुआ या डांडिया नृत्य की मुद्रा में खड़ा है। इन सभी मूर्तियों को असली कपड़े पहनाए गए हैं, जिससे ये बिल्कुल वास्तविक इंसान जैसी लगती हैं।



तीसरी झांकी: बस्तर की ऐतिहासिक 'काछनगादी रस्म'

इसी मार्ग पर आगे बढ़ने पर बस्तर की 600 साल पुरानी ऐतिहासिक 'काछनगादी रस्म' के दर्शन होते हैं, जिसके बिना बस्तर का दशहरा शुरू नहीं होता। यहाँ मां काछन देवी को अष्टभुजी रौद्र रूप में दिखाया गया है, जिनके खुले काले बाल और हाथों के अस्त्र-शस्त्र उनके दिव्य स्वरूप को दर्शाते हैं। माता की प्रतिमा के ठीक सामने बेल के नुकीले कांटों से बना एक झूला (गादी) तैयार किया गया है, जिस पर एक छोटी कुंवारी कन्या लेटी हुई है। पंडाल की छत पर हवा में तैरते हुए माता के गण और स्थानीय देवी-देवता दिखाई दे रहे हैं, जो नीले-पीले झूमरों की रोशनी में इस पूरे माहौल को रहस्यमयी और दिव्य मंदिर जैसा रूप देते हैं।



चौथी झांकी: हवा में उड़ती माता और महिषासुर संग्राम

पहाड़ी चौक के इस पूरे क्षेत्र का सबसे बड़ा आकर्षण हवा में उड़ती हुई माता रानी का रूप है। यहाँ किसी मंच या धरातल के बजाय माँ दुर्गा को शून्य में तैरती हुई मुद्रा में दिखाया गया है, मानो वे आकाश मार्ग से सीधे युद्ध भूमि में उतरी हों। माता के हाथ में एक दिव्य त्रिशूल है, जिससे निकलती हुई चमचमाती नियॉन लाइट सीधे महिषासुर की छाती पर प्रहार कर रही है। नीले रंग की विशाल काया और बड़े-बड़े सींगों वाले महिषासुर के चेहरे पर हार का खौफ साफ़ दिखता है। बैकग्राउंड में हज़ारों सैनिकों की लड़ती हुई सेना दिखाई दे रही है, जिससे पूरा पंडाल एक जीवंत युद्ध क्षेत्र जैसा महसूस होता है।

गुढ़ियारी के पहाड़ी चौक में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर सजी ये चारों झांकियां न सिर्फ दर्शकों को आकर्षित कर रही हैं, बल्कि हमारी नई पीढ़ी को अपनी माटी, लोक-परंपराओं और सनातन संस्कृति के गौरवशाली इतिहास पर गर्व करना भी सिखा रही हैं।

छत्तीसगढ़ का ऐसा गांव, जहां 825 साल से नहीं जला कोई शव



• चंचल द्विवेदी, संवाददाता, रायपुर

इन दिनों शारदीय नवरात्रि चल रही है। छत्तीसगढ़ समेत पूरे देश में भक्त माता दुर्गा की भक्ति में डूबे हुए हैं। नौ दिनों तक पूजा-पाठ और आराधना के बाद जैसे ही नवरात्रि समाप्त होती है, देशभर में दशहरे की धूम शुरू हो जाती है। जगह-जगह रावण के पुतले जलाए जाते हैं और बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश दिया जाता है। लेकिन छत्तीसगढ़ में एक गांव ऐसा भी है, जहां दशहरे पर रावण दहन नहीं होता। हैरानी की बात तो यह है कि यहां होलिका दहन भी नहीं होता और किसी की मृत्यु होने पर गांव की सीमा के भीतर चिता भी नहीं जलाई जाती। यह गांव है धमतरी जिले का तेलीनसत्ती, जहां इन परंपराओं के पीछे तेलीन सत्ती माता से जुड़ी एक पुरानी लोककथा सुनाई जाती है।

ग्रामीणों के बीच प्रचलित कथा के मुताबिक, बहुत पहले गांव में भानुमति नाम की एक महिला रहती थी। वह एक युवक को अपना पति मान चुकी थी। बताया जाता है कि भानुमति के सात भाई उसके पति को पसंद नहीं करते थे। इसी के चलते एक दिन उन्होंने उसके पति की हत्या कर दी और शव को खेत में ले जाकर जमीन के अंदर दफना दिया। भानुमति को बताया गया कि उसका पति कहीं चला गया है, लेकिन उसे इस बात पर भरोसा नहीं हुआ। वह अपने पति को तलाशते हुए उस जगह तक पहुंच गई, जहां उसके शव को दफनाया गया था।

कहा जाता है कि वहां मिट्टी के भीतर से उसे कुछ दिखाई दिया। भानुमति ने जब ध्यान से देखा तो उसे जमीन में दबी हुई एक उंगली नजर आई। उसे शक हुआ कि कहीं यह उसी के पति की उंगली तो नहीं। उसने मिट्टी हटानी शुरू की। मिट्टी खोदते-खोदते पहले उंगली बाहर आई, फिर धीरे-धीरे पूरा हाथ दिखाई देने लगा। हाथ देखते ही उसका शक यकीन में बदल गया कि जमीन के नीचे उसके पति का ही शव है।

इसके बाद भानुमति ने हिम्मत करके पूरी मिट्टी खोदी और अपने पति का शव बाहर निकाला। पति की मौत का सच सामने आने के बाद वह बुरी तरह टूट गई। लोककथा के अनुसार, उसने अपने पति की चिता तैयार की और उसी चिता में स्वयं भी सती हो गई। इसी घटना को तेलीन सत्ती माता से जोड़कर देखा जाता है।

स्थानीय मान्यताओं के अनुसार, 12वीं सदी के बाद से तेलीनसत्ती में न रावण दहन हुआ, न होलिका दहन और न ही गांव की सीमा के भीतर किसी व्यक्ति की चिता जलाई गई। किसी की मृत्यु होने पर शव को गांव की सीमा से बाहर, दूसरे गांव की ओर ले जाकर अंतिम संस्कार किया जाता है। ग्रामीणों का विश्वास है कि इस परंपरा को तोड़ने से माता नाराज हो सकती हैं और अनहोनी का सामना करना पड़ सकता है।

तेलीनसत्ती में तेलीन सत्ती माता को सिर्फ देवी के रूप में नहीं, बल्कि गांव की रक्षक के रूप में भी पूजा जाता है। ग्रामीणों की मान्यता है कि किसी भी शुभ काम की शुरुआत माता का आशीर्वाद लेकर ही की जाती है। यही वजह है कि पीढ़ियां बदल गईं, समय बदल गया, लेकिन गांव की यह परंपरा आज भी कायम है।

तेलीनसत्ती की पहचान सिर्फ यहां की अनोखी परंपराओं तक सीमित नहीं है। माता के प्रति लोगों की गहरी आस्था का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि आसपास के इलाकों के साथ-साथ दूर-दूर से भी श्रद्धालु माता के दर्शन करने पहुंचते हैं। कोई अपनी मनोकामना लेकर आता है, तो कोई पूरी हुई मन्नत के लिए माता के दरबार में माथा टेकता है। ग्रामीणों के बीच ऐसी मान्यता है कि सच्चे मन से माता से मांगी गई मुराद पूरी होती है। लोग नारियल चढ़ाकर माता का आशीर्वाद लेते हैं और अपने परिवार की सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।

तेलीनसत्ती की कहानी सिर्फ रावण और होलिका न जलाने की कहानी नहीं है। यह उस आस्था की कहानी है, जिसमें एक पुरानी लोककथा आज भी पूरे गांव की परंपराओं में सांस ले रही है। एक तरफ देश हर साल बुराई के प्रतीक रावण को जलाता है, वहीं धमतरी का यह गांव अपनी सदियों पुरानी मान्यताओं को आज भी संभाले हुए है।





बिहान योजना से बदली रेणुबाला की जिंदगी

₹70 हजार से बढ़कर 2 लाख रुपये हुई पारिवारिक आय

कोरिया। कभी घर की चारदीवारी तक सीमित रहने वाली कोरिया जिले के सोनहत विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत कटगोड़ी की रेणुबाला जायसवाल आज एक सफल महिला उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बना रही हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (बिहान) से जुड़कर उन्होंने न केवल अपना व्यवसाय शुरू किया, बल्कि परिवार की आर्थिक स्थिति को भी मजबूत बनाया।

स्वयं सहायता समूह से मिली आत्मनिर्भरता की राह

रेणुबाला जायसवाल ने अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने के उद्देश्य से स्वयं सहायता समूह से जुड़ने का निर्णय लिया। वे सत्यम महिला स्व-सहायता समूह की सदस्य बनीं और बाद में अध्यक्ष की जिम्मेदारी भी संभाली। समूह से जुड़ने के बाद उन्हें बचत, आर्थिक गतिविधियों और स्वरोजगार के नए अवसरों की जानकारी मिली।

समूह के माध्यम से पहले उन्हें आरएफ राशि और सीआईएफ के रूप में कुल 60 हजार रुपये की सहायता प्राप्त हुई। इसके बाद बैंक से 3 लाख रुपये का ऋण लेकर उन्होंने कपड़े की दुकान का व्यवसाय शुरू किया। मेहनत, लगन और आत्मविश्वास के साथ



उन्होंने अपने व्यवसाय को आगे बढ़ाया।

सालाना आय 70 हजार से बढ़कर 2 लाख रुपये से अधिक

रेणुबाला के जीवन में इस व्यवसाय ने बड़ा बदलाव लाया है। पहले उनके परिवार की वार्षिक आय लगभग 70 हजार रुपये थी। लेकिन बिहान योजना से जुड़कर स्वरोजगार शुरू करने के बाद अब उनकी पारिवारिक आय बढ़कर 2 लाख रुपये से अधिक हो गई है।

वे अब केवल अपनी दुकान तक सीमित नहीं हैं, बल्कि परिवार के सदस्यों के साथ आसपास के हाट-बाजारों में भी कपड़ों का व्यवसाय कर रही हैं। इससे उनकी आमदनी बढ़ने के साथ कारोबार का दायरा भी विस्तृत हुआ है।

परिवार के फैसलों में बढ़ी भागीदारी

आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के बाद रेणुबाला के सामाजिक और पारिवारिक जीवन में भी सकारात्मक बदलाव आया है। पहले उनकी भूमिका मुख्य रूप से गृहिणी तक सीमित थी, लेकिन अब परिवार के महत्वपूर्ण निर्णयों में उनकी सक्रिय भागीदारी होती है।

उनकी यह सफलता बताती है कि सही मार्गदर्शन, आर्थिक सहयोग और मेहनत के बल पर ग्रामीण महिलाएं भी अपने जीवन में बड़ा बदलाव ला सकती हैं।

अन्य महिलाओं के लिए बनीं प्रेरणा

रेणुबाला जायसवाल की सफलता की कहानी राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (बिहान) के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को मिल रहे अवसरों का उदाहरण है। स्वयं सहायता समूह ने उन्हें आर्थिक गतिविधियों से जुड़ने का मंच दिया, जिसका लाभ उठाकर उन्होंने अपने परिवार की आय बढ़ाई और आत्मनिर्भरता की राह बनाई।

आज रेणुबाला उन महिलाओं के लिए प्रेरणा हैं, जो अपने परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने और स्वयं की पहचान बनाने का सपना देखती हैं। उनकी कहानी संदेश देती है कि यदि हौसला, मेहनत और सही अवसर मिल जाएं, तो एक गृहिणी भी सफल उद्यमी बन सकती है।

गेंदा फूल की खेती से बदली किसान कुमारी चंद्राकर की तकदीर, एक एकड़ में ₹2.07 लाख तक शुद्ध कमाई



महासमुंद। छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले के बागबाहरा विकासखंड के भदरसी गांव की किसान कुमारी चंद्राकर ने पारंपरिक धान की खेती से आगे बढ़कर उद्यानिकी फसलों को अपनाया और अपनी मेहनत से सफलता की नई मिसाल पेश की है। राष्ट्रीय बागवानी मिशन के सहयोग से गेंदा फूल की खेती कर उन्होंने प्रति एकड़ लगभग 2 लाख 7 हजार रुपये की शुद्ध कमाई हासिल की है। उनकी यह सफलता क्षेत्र के अन्य किसानों के लिए प्रेरणास्रोत बन रही है।

धान की खेती में लागत अधिक, मुनाफा कम होने पर अपनाया नया रास्ता

कुमारी चंद्राकर के पास कुल 0.64 हेक्टेयर सिंचित कृषि भूमि है। पारंपरिक धान की खेती में अधिक लागत और अपेक्षाकृत कम मुनाफे को देखते हुए उन्होंने उद्यानिकी फसलों की ओर रुख किया। वर्ष 2025-26 में राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अंतर्गत पुष्प क्षेत्र विस्तार घटक के तहत उन्होंने गेंदा फूल की खेती शुरू की।

योजना के तहत 0.64 हेक्टेयर क्षेत्र में गेंदा फूल की खेती के लिए उन्हें 12 हजार 800 रुपये का अनुदान प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) के माध्यम से प्रदान किया गया।

आधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक पद्धति से मिली सफलता

कुमारी चंद्राकर ने गेंदा फूल की खेती में आधुनिक कृषि तकनीकों, ड्रिप सिंचाई प्रणाली और नए कृषि उपकरणों का उपयोग किया। बेहतर फसल प्रबंधन और वैज्ञानिक तरीके से खेती करने के कारण उन्हें अच्छा उत्पादन और बेहतर आर्थिक लाभ मिला। उनकी सफलता यह दर्शाती है कि पारंपरिक खेती के साथ-साथ बाजार की मांग के अनुरूप उद्यानिकी फसलों को अपनाकर किसान अपनी आय बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

एक ही खेत में कई फसलों से आय बढ़ाने की पहल

गेंदा फूल की खेती के साथ कुमारी चंद्राकर धनिया, प्याज, बैंगन, मूली और विभिन्न प्रकार की हरी सब्जियों की भी खेती कर रही हैं। अलग-अलग फसलों को अपनाने से उन्हें खेती में विविधता लाने और आय के नए अवसर विकसित करने में मदद मिल रही है।

अन्य किसानों के लिए बनीं प्रेरणा

कुमारी चंद्राकर की सफलता से आसपास के गांवों के किसानों में भी उद्यानिकी फसलों के प्रति रुचि बढ़ रही है। उनकी खेती का तरीका यह संदेश देता है कि सही तकनीक, बेहतर प्रबंधन, सरकारी योजनाओं का लाभ और मेहनत के जरिए खेती को अधिक लाभकारी बनाया जा सकता है।

ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों की आय बढ़ाने और कृषि को लाभ का व्यवसाय बनाने की दिशा में कुमारी चंद्राकर का प्रयास एक प्रेरक उदाहरण है। उनकी कहानी बताती है कि खेती में नवाचार और नई संभावनाओं को अपनाकर किसान अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत कर सकते हैं।

दो कमरों से शुरू हुआ सूकर पालन का कारोबार

आज 150 सूकरों के फार्म से सालाना 11 लाख रुपये का शुद्ध मुनाफा

सरगुजा जिले के ग्राम शिवनाथपुर निवासी अनिल कुमार खेस्स ने मेहनत, लगन और बेहतर प्रबंधन के दम पर स्वरोजगार की एक प्रेरणादायक मिसाल पेश की है। महज दो कमरों और सूकर पालन की एक छोटी इकाई से शुरू हुआ उनका व्यवसाय आज सफल कारोबार बन चुका है। वर्तमान में उनके फार्म में करीब 150 सूकर हैं। वित्तीय वर्ष 2024-25 में उन्होंने लगभग 14.5 से 15 लाख रुपये की बिक्री की, जिससे उन्हें करीब 11 लाख रुपये का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ।

सरकारी योजना का मिला सहयोग, मेहनत से बदली किस्मत

अनिल कुमार खेस्स को वर्ष 2018 में पशुधन विकास विभाग की सूकर प्रदाय योजना के तहत एक इकाई मिली थी। इसी सहायता से उन्होंने सूकर पालन की शुरुआत की। शुरुआती दौर में उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और लगातार अपने व्यवसाय को बेहतर बनाने में जुटे रहे।

उन्होंने सूकर पालन से होने वाली आमदनी का एक हिस्सा दोबारा व्यवसाय में निवेश किया। इसके परिणामस्वरूप फार्म का धीरे-धीरे विस्तार होता गया। दो कमरों से शुरू हुआ कारोबार आज बढ़कर 10 अतिरिक्त कमरों तक पहुंच गया है। बेहतर प्रबंधन और लगातार निवेश ने उनके व्यवसाय को आय का मजबूत साधन बना दिया है।

विशेषज्ञों के मार्गदर्शन से मिला लाभ

अनिल की सफलता में पशुधन विकास विभाग के विशेषज्ञों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। विभाग के चिकित्सकों ने उन्हें सूकरों के खान-पान, शेड प्रबंधन, प्रजनन, टीकाकरण और उपचार संबंधी आवश्यक जानकारी एवं मार्गदर्शन दिया।

इस मार्गदर्शन को अपनाकर उन्होंने अपने फार्म के प्रबंधन में सुधार किया। पशुओं की उचित देखभाल और वैज्ञानिक तरीकों के इस्तेमाल से उन्हें व्यवसाय को आगे बढ़ाने में मदद मिली।

स्वरोजगार के लिए प्रेरणा बने अनिल

अनिल कुमार खेस्स की सफलता बताती है कि सरकारी योजनाओं का सही लाभ उठाकर और मेहनत के साथ बेहतर प्रबंधन अपनाकर पशुपालन को लाभकारी स्वरोजगार में बदला जा सकता है। उनका अनुभव ग्रामीण क्षेत्रों के उन युवाओं और किसानों के लिए प्रेरणादायक है, जो कम संसाधनों के साथ अपना व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं।

उनकी सफलता यह संदेश देती है कि छोटे स्तर से शुरुआत करने के बाद भी सही दिशा, धैर्य और निरंतर निवेश के माध्यम से बड़े लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं।



रायपुर में 24 घंटे में 159 गुमशुदगी FIR, 78 महिलाएं शामिल

• प्रितेश बंजारे, संवाददाता, रायपुर

रायपुर। राजधानी रायपुर में गुमशुदगी के मामलों ने पुलिस की चिंता बढ़ा दी है। शनिवार से रविवार (3 अक्टूबर से 4 अक्टूबर) के बीच महज 24 घंटे में रायपुर कमिश्नरेट और ग्रामीण थाना क्षेत्रों में 159 गुमशुदगी की FIR दर्ज की गई। इनमें 78 महिलाएं, 54 वयस्क पुरुष, 17 बच्चे-नाबालिग और 10 बुजुर्ग शामिल हैं।

पुलिस अब इन मामलों को केवल सामान्य गुमशुदगी मानकर तलाश नहीं कर रही है। सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के बाद हर प्रकरण में यह भी जांच की जा रही है कि कहीं लापता व्यक्ति को बंधक बनाकर तो नहीं रखा गया या उसे गलत तरीके से छिपाया तो नहीं गया।

महिलाओं की संख्या सबसे ज्यादा

24 घंटे में दर्ज मामलों में महिलाओं की संख्या सबसे अधिक है। पुलिस के मुताबिक गुमशुदगी के पीछे पारिवारिक विवाद, पति-पत्नी के बीच अनबन, प्रेम संबंध, आर्थिक परेशानी, बेरोजगारी, नशे की लत, संपत्ति विवाद और घरेलू हिंसा जैसे कारण सामने आ सकते हैं।

किशोरों और नाबालिगों के मामलों में पढ़ाई का दबाव, प्रेम संबंध, दोस्तों का प्रभाव और पारिवारिक तनाव भी गुमशुदगी की वजह हो सकते हैं। हालांकि पुलिस का कहना है कि वास्तविक कारण प्रत्येक मामले की जांच के बाद ही स्पष्ट होगा।

कमिश्नरेट और ग्रामीण इलाकों में मामले

रायपुर कमिश्नरेट के अलग-अलग थानों में गुमशुदगी के मामले दर्ज हुए हैं। इनमें उरला, मुजगहन, गुढ़ियारी, खमतराई और टिकरापारा जैसे क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक प्रकरण सामने आए हैं।

ग्रामीण क्षेत्र में भी खरोरा, तिल्दा नेवरा, अभनपुर, धरसीवां, मंदिर हसौद और सिलतरा समेत कई थाना क्षेत्रों से लोग लापता हुए हैं। पुलिस सभी मामलों में अलग-अलग परिस्थितियों के आधार पर तलाश और जांच कर रही है।

शादी के अगले दिन दुल्हन लापता

गोलबाजार थाना क्षेत्र में शादी के अगले ही दिन 25 वर्षीय नवविवाहिता के लापता होने का मामला भी सामने आया है। परिवार के मुताबिक खरीदारी के दौरान पति कुछ देर के लिए अलग हुआ और लौटने पर महिला वहां नहीं मिली।

इस मामले में पुलिस महिला के संभावित संपर्कों, मोबाइल और आखिरी लोकेशन समेत अन्य जानकारियां जुटा रही है। पुलिस यह भी पता लगा रही है कि महिला खुद कहीं गई या उसके लापता होने के पीछे कोई अन्य वजह है।

खलासी, बुजुर्ग और महिला भी गायब

आमानाका थाना क्षेत्र के न्यू ट्रांसपोर्ट नगर, टाटीबंध से एक ट्रक खलासी के लापता होने की शिकायत दर्ज हुई है। इसी तरह माना कैंप स्थित वरिष्ठजन आश्रम से 72 वर्षीय बुजुर्ग के बिना बताए चले जाने का मामला सामने आया।

इसके अलावा इलाज के लिए रायपुर लाई गई 43 वर्षीय महिला भी अस्पताल से लापता हो गई। परिजनों के अनुसार महिला मानसिक रूप से अस्वस्थ हैं। इन मामलों में पुलिस संबंधित लोगों और संभावित स्थानों पर तलाश कर रही है।

अब गुमशुदगी के साथ अपराध का एंगल भी

पुलिस अधिकारियों के मुताबिक पहले गुमशुदगी दर्ज कर जांच आगे बढ़ाई जाती थी, लेकिन अब परिस्थितियों के आधार पर शुरुआत से ही अपराध की आशंका को जांच में शामिल किया जा रहा है।

पुलिस मोबाइल फोन, कॉल डिटेल, संपर्कों, आखिरी लोकेशन, सीसीटीवी फुटेज और परिजनों से पूछताछ के जरिए लापता लोगों तक पहुंचने की कोशिश कर रही है। गंभीर मामलों में बंधक बनाने या गलत तरीके से छिपाने की आशंका की भी जांच की जा रही है।

पुलिस के सामने बड़ी चुनौती

डीसीपी तारकेश्वर पटेल के अनुसार सुप्रीम कोर्ट के निर्देशों के बाद सभी गुम प्रकरणों में अपराध दर्ज कर जांच की प्रक्रिया अपनाई जा रही है। अब पुलिस के सामने सबसे बड़ी चुनौती लापता लोगों को जल्द से जल्द सुरक्षित तलाशना है।

एक दिन में 159 गुमशुदगी के मामले सामने आना निश्चित रूप से गंभीर आंकड़ा है। हालांकि इनमें से कितने मामले स्वैच्छिक रूप से घर छोड़ने, पारिवारिक विवाद या अन्य कारणों से जुड़े हैं और कितने मामलों में अपराध की आशंका है, यह जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट होगा।



क्रम.	थाना	मामलों की संख्या
1	मुजगहन	16
2	उरला	18
3	गुढ़ियारी	13
4	खमतराई	11
5	टिकरापारा	9
6	डीडी नगर	7
7	पंडरी	7
8	आमानाका	5
9	गंज	5
10	राजेंद्र नगर	5
11	खमहारडीह	5
12	तेलीबांधा	4
13	सरस्वती नगर	3
14	पुरानी बस्ती	3
15	सिविल लाइन	2
16	मौदहापारा	2
17	आजाद चौक	1
18	गोलबाजार	1
19	कोतवाली	1
20	कबीर नगर	1

क्रम.	थाना	मामलों की संख्या
1	खरोरा	7
2	तिल्दा नेवरा	5
3	अभनपुर	4
4	धरसीवां	4
5	मंदिर हसौद	4
6	सिलतरा	4
7	आरंग	3
8	गोबरा नवापारा	3
9	माना कैंप	3
10	विधानसभा	2
11	राखी	1

रायपुर में एक दिन में सैकड़ों लोगों के लापता होने की खबर भ्रामक, DCP तारकेश्वर पटेल ने किया खंडन

सोशल मीडिया पर रायपुर में एक ही दिन में सैकड़ों लोगों के लापता होने का दावा करने वाली खबरों को पुलिस कमिश्नरेट रायपुर ने भ्रामक और असत्य बताया है। पुलिस कमिश्नरेट सेंट्रल के डीसीपी तारकेश्वर पटेल ने इन वायरल खबरों का खंडन करते हुए वास्तविक आंकड़ों को लेकर स्थिति स्पष्ट की है।

पुलिस के अनुसार, सोशल मीडिया पर लापता लोगों से संबंधित जिन आंकड़ों को एक दिन का बताकर प्रसारित किया जा रहा है, वे वास्तव में पांच महीने की अवधि के हैं। इस तरह आंकड़ों को गलत संदर्भ में प्रस्तुत करने से लोगों के बीच भ्रम और अनावश्यक चिंता की स्थिति बन सकती है।



डीसीपी तारकेश्वर पटेल ने स्पष्ट किया कि वायरल खबरों में बताए जा रहे आंकड़ों को एक दिन की घटना के रूप में पेश करना सही नहीं है। पुलिस कमिश्नरेट ने लोगों से अपील की है कि सोशल मीडिया पर प्रसारित किसी भी खबर पर विश्वास करने या उसे आगे साझा करने से पहले उसकी सत्यता की जांच जरूर करें।

पुलिस ने यह भी बताया कि लापता व्यक्तियों से जुड़े मामलों में उच्चतम न्यायालय के निर्देशों के तहत त्वरित कार्रवाई की जा रही है। ऐसे मामलों को गंभीरता से लेते हुए आवश्यक प्रक्रिया का पालन किया जा रहा है।

पुलिस की अपील: नागरिक भ्रामक खबरों से बचें और किसी भी अपुष्ट जानकारी को साझा न करें। लापता व्यक्तियों से संबंधित जानकारी के लिए पुलिस के आधिकारिक स्रोतों पर भरोसा करें, ताकि अफवाहों के कारण समाज में भ्रम की स्थिति न बने।

मंत्री जी, गरीबों को ही कैंसर क्यों ?

छत्तीसगढ़ में जहरीले गुटखे का खेल और ड्रग विभाग की जानलेवा खामोशी



• आरती बेनिया, संवाददाता, रायपुर

एक दौर था जब कैंसर जैसी जानलेवा बीमारी को अमीरों या उच्च मध्यम वर्ग की बीमारी माना जाता था। लेकिन आज छत्तीसगढ़ के कैंसर अस्पतालों के ओपीडी और वार्डों की स्थिति देखकर रूह कांप जाती है। आज अस्पतालों में सबसे ज्यादा भीड़ उन गरीबों की है, जो रोज कमाते हैं और रोज खाते हैं। इस स्थिति ने एक बड़े सवाल को जन्म दिया है कि रायपुर जैसे 'बी-क्लास' शहर में, जहां एक दशक पहले तक कैंसर का एक भी प्राइवेट अस्पताल नहीं था, वहां अचानक पिछले कुछ सालों में 6-6 कॉर्पोरेट कैंसर अस्पताल कैसे खुल गए? हाल ही में एक महीने के भीतर दो नए बड़े अस्पतालों का खुलना इस कड़वी सच्चाई को बयां करता है कि राज्य में कैंसर का बाजार कितनी तेजी से फैल रहा है।

85 फीसदी मरीज गरीब, चौंकाने वाला खुलासा

रायपुर के एक प्रतिष्ठित ऑन्कोलॉजिस्ट (कैंसर विशेषज्ञ के मुताबिक, छत्तीसगढ़ में कैंसर के कुल मरीजों में से 85 प्रतिशत से अधिक लोग गरीब तबके से आते हैं। इनमें से भी आधे से ज्यादा मरीज मुंह, गले और फेफड़ों के कैंसर से पीड़ित हैं। सवाल उठता है कि ऐसा क्यों हो रहा है? इसका सीधा और खौफनाक कारण है,पाउच और गुटखा बनाने वाली कंपनियों का बेलगाम होना।

मुनाफे के अंधे खेल में ये कंपनियां गुटखे में धड़ल्ले से मैग्नीशियम कार्बोनेट जैसे जहरीले रसायन मिला रही हैं। इसे मिलाने के पीछे मुख्य वजह यह है कि इससे गुटखे की शेल्फ लाइफ बढ़ जाती है, वह आपस में चिपकता नहीं है और खाने वाले को गले में एक झूठी ठंडक का अहसास होता है। यह रसायन धीरे-धीरे इंसान के मुंह और गले को अंदर से खोखला कर देता है।

ड्रग विभाग का मौन संरक्षण या लाचारी?

इस पूरे मामले में सबसे शर्मनाक भूमिका राज्य के ड्रग विभाग की है। जिस विभाग की जिम्मेदारी इन गुटखा कंपनियों की जांच करने और उनके सैंपल लेने की है, उसने पिछले तीन सालों से एक भी सैंपल नहीं लिया है। चौंकाने वाली बात यह है कि ड्रग विभाग के पास 63 अधिकारियों का भारी-भरकम अमला मौजूद है। लेकिन सूत्रों की मानें तो इन अधिकारियों को सख्त हिदायत है कि वे इन रसूखदार गुटखा कंपनियों की तरफ आंख उठाकर भी न देखें। जब इस मुद्दे को मीडिया में उठाया गया, तब जाकर खानापूर्ति के लिए पिछले दो दिनों में एकाध छोटी कंपनी पर हल्की-फुल्की दबिश दी गई, जो सिर्फ एक दिखावा है।

स्वास्थ्य मंत्री और सचिव से सीधी अपील

चूंकि ड्रग विभाग सीधे तौर पर स्वास्थ्य मंत्रालय के अधीन आता है, इसलिए यह जिम्मेदारी सीधे स्वास्थ्य मंत्री और स्वास्थ्य सचिव की बनती है। उन्हें तुरंत इस गंभीर लापरवाही की जांच करानी चाहिए। अगर स्वास्थ्य मंत्रालय सख्त कदम उठाकर पान मसालों और गुटखों में मिलाए जाने वाले इस जहरीले पदार्थ पर पूरी तरह रोक लगा देता है, तो यह छत्तीसगढ़ की उस गरीब जनता के जीवन की रक्षा होगी जो सिस्टम की लापरवाही के कारण मौत के मुंह में धकेली जा रही है। क्या सरकार इस माफिया पर नकेल कसेगी या गरीब यूं ही अस्पतालों की तिजोरियां भरते रहेंगे?



एशियन गेम्स में संजू देवी ने रचा इतिहास



रायपुर। जापान में आयोजित एशियन गेम्स 2026 की महिला कबड्डी स्पर्धा में भारतीय टीम ने ईरान को 37-34 से हराकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। इस ऐतिहासिक जीत में छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले की बेटी संजू देवी यादव का अहम योगदान रहा।

कोरबा जिले के केराकछार गांव से निकलकर अंतरराष्ट्रीय मंच तक पहुंची संजू देवी ने अपने शानदार खेल से प्रदेश का गौरव बढ़ाया है। वह भारतीय महिला कबड्डी टीम की प्रमुख खिलाड़ियों में शामिल हैं और फाइनल में भी उनका प्रदर्शन महत्वपूर्ण रहा।

गांव से शुरू हुआ संजू का संघर्ष

संजू देवी का जन्म कोरबा जिले के पाली ब्लॉक के एक साधारण परिवार में हुआ। उनके पिता मेहनत-मजदूरी करते हैं। संजू ने अपने गांव के सरकारी स्कूल में पांचवीं कक्षा से कबड्डी खेलना शुरू किया था। उनके शुरुआती कोच अनुज प्रताप सिंह रहे। ग्रामीण क्षेत्र में लड़कियों का कबड्डी खेलना आसान नहीं था। इसके बावजूद संजू ने हार नहीं मानी। बेहतर अभ्यास के लिए वह रोज करीब तीन घंटे का सफर तय कर कोरबा जाती थीं। उनकी प्रतिभा देखकर बाद में उन्हें बिलासपुर की महिला आवासीय कबड्डी अकादमी में प्रवेश मिला।

अकादमी में निखरा खेल

बिलासपुर में कोच दिल कुमार राठौड़ के मार्गदर्शन में संजू के खेल को नई दिशा मिली। लगातार अभ्यास, अनुशासन और मेहनत के दम पर उन्होंने विश्वविद्यालय स्तर की प्रतियोगिताओं में भी शानदार प्रदर्शन किया।

इसके बाद संजू ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई और धीरे-धीरे भारतीय महिला कबड्डी टीम का हिस्सा बन गईं। उनके प्रदर्शन ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं तक पहुंचाया।

वर्ल्ड कप में बनीं MVP

नवंबर 2025 में ढाका, बांग्लादेश में आयोजित महिला कबड्डी विश्व कप में संजू देवी ने शानदार प्रदर्शन किया। भारतीय टीम की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने के साथ उन्हें पूरे टूर्नामेंट की मोस्ट वैल्यूएबल प्लेयर यानी MVP चुना गया।

इसके बाद ईरान में आयोजित एशियन कबड्डी चैंपियनशिप में भी उन्होंने भारतीय टीम की सफलता में योगदान दिया। लगातार शानदार प्रदर्शन के बाद एशियन गेम्स 2026 में उन्होंने देश के लिए स्वर्ण पदक जीतने में अहम भूमिका निभाई।

एयरपोर्ट वीडियो के बाद आई चर्चा में

एशियन गेम्स से लौटने के बाद संजू देवी के एयरपोर्ट पहुंचने का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। वीडियो में भव्य स्वागत या बड़ी भीड़ नजर नहीं आने के बाद सोशल मीडिया पर उनके संघर्ष और उपलब्धि को लेकर तरह-तरह की चर्चाएं शुरू हो गईं।

इसके बाद सोशल मीडिया पर उनकी उपलब्धि और स्वागत को लेकर कई तरह की बातें और अफवाहें भी सामने आईं। संजू देवी ने खुद सोशल मीडिया के माध्यम से सामने आकर इन अफवाहों का खंडन किया और वास्तविक स्थिति स्पष्ट की।

मुख्यमंत्री ने किया सम्मान

एशियन गेम्स में स्वर्ण पदक जीतने के बाद संजू देवी ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय से सीएम निवास में मुलाकात की। मुख्यमंत्री ने उन्हें ऐतिहासिक उपलब्धि के लिए बधाई देते हुए अभिनंदन किया और 51 लाख रुपये की प्रोत्साहन राशि देने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री साय ने कहा कि संजू देवी ने अपने उत्कृष्ट खेल, कठिन परिश्रम और दृढ़ संकल्प से अंतरराष्ट्रीय मंच पर छत्तीसगढ़ और देश का गौरव बढ़ाया है। उनकी सफलता प्रदेश की बेटियों और युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा है।

गांव की बेटियों को मिली नई प्रेरणा

मुख्यमंत्री ने संजू देवी से एशियन गेम्स के अनुभव और भारतीय टीम के प्रदर्शन को लेकर बातचीत की। उन्होंने कहा कि खिलाड़ी की सफलता सिर्फ उसकी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं होती, बल्कि इससे हजारों युवाओं के सपनों को नई उड़ान मिलती है।

संजू देवी की कहानी खासतौर पर ग्रामीण क्षेत्रों के उन बच्चों और बेटियों के लिए प्रेरणादायक है, जो सीमित संसाधनों के बावजूद खेल के क्षेत्र में आगे बढ़ने का सपना देखते हैं।

छत्तीसगढ़ के दूसरे खिलाड़ियों ने भी बढ़ाया मान

एशियन गेम्स और अंतरराष्ट्रीय खेलों में छत्तीसगढ़ के कई खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। राजनांदगांव की वेटलिफ्टर ज्ञानेश्वरी यादव और दुर्ग की बैडमिंटन खिलाड़ी आकर्षी कश्यप जैसे खिलाड़ियों ने भी राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश की पहचान मजबूत की है।

संजू देवी की उपलब्धि हालांकि ग्रामीण छत्तीसगढ़ के लिए खास मायने रखती है। साधारण परिवार और गांव से निकलकर विश्व स्तरीय मंच पर पहुंचने वाली उनकी कहानी बताती है कि प्रतिभा को सही मेहनत, प्रशिक्षण और अवसर मिले तो गांव की बेटी भी देश के लिए इतिहास रच सकती है।

संजू देवी का सफर-गांव के मैदान से एशियन गेम्स के स्वर्ण पदक तक-आज छत्तीसगढ़ की नई पीढ़ी के लिए संघर्ष, संकल्प और सफलता की मिसाल बन गया है।

इंडियाज बेस्ट डांसर सीजन 5' के विजेता बने रायपुर के रितेश पॉल, ट्रॉफी के साथ जीते 15 लाख



रायपुर। छत्तीसगढ़ के 19 वर्षीय होनहार डांसर रितेश पॉल ने मुंबई में आयोजित नेशनल रियलिटी शो 'इंडियाज बेस्ट डांसर सीजन 5' का खिताब अपने नाम कर पूरे प्रदेश का नाम देश में रोशन कर दिया है। तीन बार रिजेक्शन का सामना करने और सेमीफाइनल में हाथ फ्रैक्चर होने के बाद भी रितेश ने हार नहीं मानी। उन्होंने न केवल शो की चमचमाती ट्रॉफी अपने नाम की, बल्कि 15 लाख रुपये की प्राइज मनी और एक नई कार भी जीती। रायपुर लौटने पर त्रिमूर्ति नगर में उनका ऐतिहासिक स्वागत हुआ। इस शानदार सफलता पर रितेश पॉल और उनके गुरु मनीष जी से हुई विशेष बातचीत के मुख्य अंश

सवाल: इंडियाज बेस्ट डांसर के मंच तक पहुँचने और विजेता बनने का सफर कैसा रहा?

जवाब: यह सफर आसान नहीं था। मैंने IBD सीजन 2, सीजन 3 और सीजन 4 में भी ऑडिशन दिए थे, लेकिन हर बार मुझे रिजेक्शन का सामना करना पड़ा। जब सीजन 5 आया और उसका फॉर्मेट 'इंडिया वाला डांस' (बॉलीवुड और 80s-90s के गानों पर आधारित) हुआ, तो मैंने उम्मीद छोड़ दी थी कि मेरा सिलेक्शन होगा। लेकिन बार-बार कॉल आने पर मैंने ऑडिशन दिया और सेलेक्ट हो गया। मेरे मेंटोर प्रतीक सर ने मुझे बहुत ही सरल तरीके से ट्रेनिंग दी, जिसकी बदौलत मैं यह खिताब जीत सका।

सवाल: जब आप ट्रॉफी लेकर रायपुर लौटे, तो आपकी माता जी की क्या प्रतिक्रिया थी?

जवाब: मैं करीब 7 महीने बाद घर लौटा था। मेरी मम्मी ने मुझसे कुछ कहा नहीं, जो भी कहा उनकी आँखों ने कहा। उनकी आँखों में मेरे लिए बहुत गर्व था। आँखें नम होने के बावजूद, वे हाथ में आरती की थाली पकड़कर खुशी से डांस कर रही थीं।

सवाल: आपकी उम्र केवल 19 साल है, आपकी पढ़ाई के बारे में हमारे पाठक जानना चाहेंगे?

जवाब: मैंने सरकारी स्कूल से पढ़ाई की है। जब मैं 12वीं कक्षा में था, तभी मुझे ऑडिशन के लिए मुंबई जाना पड़ा, जिसके कारण मुझे 12वीं की पढ़ाई बीच में ही छोड़नी पड़ी। लेकिन अब मैं अपनी 12वीं की पढ़ाई को दोबारा जारी रखूँगा।

सवाल: इस बड़ी सफलता के बाद अब आपका सबसे बड़ा सपना क्या है?

जवाब: मेरा सबसे बड़ा सपना यह है कि मैं अपनी मम्मी को कभी काम पर न जाने दूँ। मैं उनके लिए एक घर बनाना चाहता हूँ, जिससे किया वादा मैं निभाऊँगा। मैंने सोचा है कि उस घर का नाम मैं हरिदर्शन रखूँगा।

सवाल: रायपुर एयरपोर्ट और अपने मोहल्ले में मिले स्वागत को देखकर कैसा लगा?

जवाब: यह मेरे लिए पूरी तरह से अप्रत्याशित (Unexpected) था। एयरपोर्ट पर कई राजनेता और 30-40 लोग मुझे लेने आए थे। जब मैं अपने मोहल्ले त्रिमूर्ति नगर पहुँचा, तो वहाँ धुमाल बज रहा था और पूरा मोहल्ला स्वागत के लिए उमड़ पड़ा था। वह पल मेरे लिए एक सपने जैसा था।

गुरु मनीष (डांस टीचर) से बातचीत

सवाल: गुरु मनीष जी, आपने रितेश को नि:शुल्क सिखाया और इस मुकाम तक पहुँचाया, उनके अंदर आपने ऐसी क्या खूबी देखी और एक गुरु के नाते आप इस जीत को कैसे देखते हैं?

जवाब: मुझे बहुत गर्व महसूस हो रहा है। यह गर्व सिर्फ ट्रॉफी जीतने का नहीं है, बल्कि इससे पूरी डांस कम्युनिटी को एक नई उम्मीद मिलेगी कि डांस में भी एक बेहतरीन करियर बनाया जा सकता है। जब रितेश पहली बार मेरे पास आया, तो मैंने उसके चेहरे की मासूमियत और डांस सीखने की तड़प देखी। मेरे पिता नहीं हैं और उस वक्त रितेश के पिता भी नहीं थे, इसलिए मैं उससे भावनात्मक रूप से बहुत जुड़ाव महसूस कर रहा था। मुझे रितेश में अपना बीता हुआ कल दिखा, इसलिए मैंने पैसों को किनारे रखकर सिर्फ उसे एक बड़ा डांसर बनाने पर ध्यान दिया। रितेश शुरुआत में कोई ट्रेंड डांसर नहीं था, उसे कोरियोग्राफी या तकनीकों की समझ नहीं थी। लेकिन उसका डेडिकेशन और अभ्यास करने की क्षमता अद्भुत थी; वह बिना खाए-पिए लगातार 12 घंटे भी प्रैक्टिस कर सकता था। सेमीफाइनल के दौरान उसका हाथ फ्रैक्चर हो गया था, डॉक्टर ने भी रिस्क लेने से मना किया था, लेकिन रितेश ने हार नहीं मानी। इसके अलावा, इस ग्लैमरस शो में भी उसने भगवत गीता, अच्छे संस्कार, माता-पिता की सेवा और छत्तीसगढ़ के कल्चर को प्रमोट किया, जो उसे सबसे अलग बनाता है।

200 बछर पुराना मंदिर: महानदी के तीर म बसे मां रिक्छिन दाई के अद्भुत महिमा

• **शशिकला साहू,** संवाददाता, रायपुर

भारत भुइंया के मंझ मा बसे छत्तीसगढ़ ला देवी दाई के बड़ आसीस मिले हे। चारों खूंट मा अलग-अलग रूप मा बिराज के छत्तीसगढ़ ला अपन आसीस ले नवा अंजोर देवत हे। धमतरी जिला के छोटी करेली गांव मा महानदी के तीर मा बइठे रिक्छिन दाई हा घलव अपन आसीस सब भगत मन ला देवत हे। रिक्छिन दाई ला मां दुर्गा के रूप माने जाथे। गांव के लोगन मन अपन गांव के कुल देवी के रूप मा उंकर पूजा करथे। सियान मन यहू कहिथे कि रिक्छिन माता हा गांव के दाउ-दीवान मन के देवी आय, फेर गांव वाला मन येला अपन गांव के देवी मानथे। ये मंदिर हर लगभग 200 बछर पुराना बताए जाथे।



मंदिर हे.. फेर मूरति नइ

अलग-अलग जगा मा आय-जाय मा देखें बर मिलथे कि मंदिर बने हे ता ओमा देवी-देवता मन के मूरति पधारे जाथे या फेर कोनो आने परकार के चिन्हा राख के ओला साकार माने जाथे। करेली गांव के रिक्छिन दाई के संग अइसन किस्सा नइहे। महानदी के तीर मा एक बाड़ा कस परसार मा रिक्छिन देवी के मंदिर हावय, फेर अंदर मा कोनो मूरति नइहे। रिक्छिन देवी के चिन्हारी अलगेच्च ढंग ले होथे। रिक्छिन देवी के पहिचान लाल पालो माने डांग अउ घोड़ा आय। लोगन मन हा इखरे पूजा करथे। एक बछर मा दू बेर दसहरा अउ होरी मा ये मंदिर हा खुलथे। ये दूनों दिन दुरिहा-दुरिहा ले भगत मन मा रिक्छिन के दरस करे बर आथे। कहे जाथे कि मां रिक्छिन सबो झन के मनोकामना ला पूरा करथे।

पालो बनाय बर करना परथे नियम-धियम

रिक्छिन माता के पहिचान पालो बनाय बर बड़ नियम-धियम के पालन करना परथे। येकर पालो बनाय के जिम्मेदारी गांव के एक झन दर्जी **रामनाथ साहू** ला मिले हे। गांव के सियान मन बताथे कि ये लाल पालो ला बनाय के बेरा ये बात के धियान रखना परथे कि वोहा भुइंया मा नइ छुआना चाही। येकर ले बांचे बर पालो सिरजइया हा विसेस बेवस्था करथे। यहू बात घलो हे कि हर साल ये पालो ला नवा सिरजाय जाथे।


रामनाथ साहू

मांग भरके, मुड़ी ढ़ाक के नइ जाना हे मंदिर भीतर

गंगरेल तीर के अंगारमोती मंदिर कस इंहचो माइलोगिन मन के मंदिर भीतर मांग भरके, मुड़ी ढांक के जाना मना हे। गांव के सियान मन बताथे कि रिक्छिन दाई ह विधवा आय। तिही पाय के इहां साज-सिंगार के साथ माइलोगिन मन मंदिर मा नइ जा सकय। मानता हावय कि अइसे करे ले देवी दाई नाराज हो जाथे अउ येकर परभाव देखा देथे। कोनो बड़का समसिया नियम टोरइया मनखे करा आ जाथे। हालांकि बाबू जात मन के जाय-आय बर कोनो परकार के प्रतिबंध नइहे।

माता खुद आथे मंदिर ले बाहिर

दसराहा अउ होरी बछर भर मा दू दिन अइसे होथे, जब रिक्छिन दाई हा खुद भगत मन ला दरसन दे बर अपन ठांव ले बाहिर आथे। वइसे तो हफ्ता मा दू दिन मां रिक्छिन के मंदिर हा खुलथे, फेर दसराहा अउ होरी के दिन बनेच्च सुभ माने जाथे। दसराहा अउ होरी के दिन देव बाजा के संग दाई ला परघाय जाथे। येकर बाद आगु-आगु देवी सवारी यानी घोड़ा अउ ओकर बाद अस्त्र-शस्त्र ला धरके सब भगत मन रेंगथे। खचाखच भीड़ के बीच देवी दाई हा गांव के सीतला माता के मंदिर तक आथे। कहे जाथे कि मां सीतला अउ रिक्छिन दाई हा बहिनी आय। दूनों झन हा इही दिन एक दूसर ले भेंट-मुलाकात करथे अउ सुख-दुख ला बांटथे।

दसराहा मा दुरिहा-दुरिहा ले आथे भगत मन, बलि के परंपरा घलो चलथे

कहे जाथे कि माता रिक्छिन ला अपन अंगना ले कोनो भगत खाली नइ भेजे। सबो के झोली भर देथे। तिही पाय के माता के भगत मन दसराहा के दिन आथे अउ मा रिक्छिन के दरसन करके मन्नत मांगथे। अवइया बछर तक मांग पूरा हो जाथे। जब भगत मन के आस हा पूरा हो जाथे ता अपन सरधा के अनुसार माता ला भेंट करथे। बोकरा के बलि देके मां रिक्छिन ला काम पूरा करे बर धन्यवाद देथे।

दसराहा के एक दिन बाद माता जाथे मगरलोड

माता रिक्छिन हा केवल करेली गांव मा नइ, बल्कि आसपास के गांव मन मा घलो बड़ प्रसिद्ध हावय। दसराहा के एक दिन बाद माने एकादशी के दिन दाई रिक्छिन हा मगरलोड मा जाथे। मां रिक्छिन तो दसराहा के दिन अपन गांव मा रहिथे। अपन गांव वाला मन संग दसराहा मनाथे। दाई रिक्छिन के अगोरा मा मगरलोड के रहवइया मन एक दिन बाद दसराहा मनाथे। करेली के रहवईया मन बताथे कि मां रिक्छिन मन सात बहिनी हे। जेमे से एक झन बसकरहिन दाई मगरलोड म हवय। ये दिन माता रिक्छिन अउ ओकर बहिनी बसकरहिन के मुलाकात होथे।

काबर मनाए जाथे दसराहा के परब ?

दसराहा के सुभ मूहुरत अउ रावन दहन के समय



हिंदू धरम म दसराहा के तिहार ला असत्य म सत्य अउ बुराई म अच्छाई के जीत के परतीक माने जाथे। सारदीय नवरातरी के नव दिन के पूजा-पाठ के बाद दसवां दिन यानी दसमी तिथि के ए बड़े परब ला मनाए जाथे। एला 'बिजयदसमी' के नाव ले घलो जाने जाथे।

हिंदू पंचांग के हिसाब ले, हर बछर कुवार महिना के सुक्ल पच्छ के दसमी तिथि के दसराहा मनाए जाथे। साल 2026 म दसराहा 20 अकटूबर (मंगलवार) के मनाए जाही। ए दिन सुभ मूहुरत म नीलकंठ चिरई के दरसन, सस्त्र (हतियार) के पूजा, समी पेड़ के पूजा अउ रावन दहन के परंपरा ला निभाए जाथे।

दसराहा के तिथि अउ सुभ मूहुरत

- दसराहा के तारिख: 20 अकटूबर 2026, मंगलवार
- दसमी तिथि के सुरुआत: 20 अकटूबर 2026 के मंझनिया 12 बज के 50 मिनट ले
- दसमी तिथि के समापन: 21 अकटूबर 2026 के मंझनिया 02 बज के 11 मिनट म
- पूजा के सुभ मूहुरत: मंझनिया 01 बज के 59 मिनट ले मंझनिया 02 बज के 45 मिनट तक (बेरा: 46 मिनट)
- मंझनिया पूजा के बेरा: मंझनिया 01 बज के 14 मिनट ले मंझनिया 03 बज के 30 मिनट तक
- बिसेस जोग: ए बछर दसराहा म श्रवण नक्षत्र के घलो सुभ संजोग बनत हे, जउन ह 20 अकटूबर के संझा 06 बज के 02 मिनट तक रइही

रावन दहन के सुभ मूहुरत

दसराहा के दिन परदोस काल म रावन, कुंभकरन अउ मेघनाद के पुतला दहन करके बुराई के अंत के परब मनाए जाथे।
रावन दहन के बेरा: 20 अकटूबर के संझा (05 बज के 47 मिनट) के बाद ले परदोस काल म रावन दहन करना अब्बड़ सुभ रइही।

काबर मनाए जाथे दसराहा?

हिंदू धरम म दसराहा के परब मनाए के पाछू दू ठन कथा हे:

1. भगवान राम ह करे रिहिन रावन के बध

रामायन के अनुसार, जब भगवान राम 14 बछर के बनबास म रिहिन, तब लंका के राजा रावन ह छल करके माता सीता ला हर के ले गे रिहिस। माता सीता ला खोजे के बेरा म राम अउ लछमन के भेंट हनुमान अउ बानर राज सुगरीव ले होइस। हनुमान डहर ले लंका म माता सीता के पता लगाए के बाद, भगवान राम के सेना अउ रावन के सेना के बीच भयंकर जुध(युद्ध) होइस। मानता हे कि रावन म बिजय (जीत) पाए बर भगवान राम ह नव दिन तक दाई दुरगा के बने बिधि ले पूजा-पाठ करिन अउ दसवां दिन रावन ला मार के अधरम के नास करिन। तब ले कुवार सुक्ल दसमी ला दसराहा के रूप म मनाए जाथे।

2. दाई दुरगा ह करे रिहिन महिसासुर के बध

एक अउ पुरखा मन के कथा के अनुसार, महिसासुर नाव के राकछस के अतियाचार ले तीनों लोक म हाहाकार मचे रिहिस। तब देवी दुरगा ह परगट हो के महिसासुर के संग पूरा नव दिन तक भयंकर जुध करिन। कुवार सुक्ल दसमी यानी दसवां दिन दाई दुरगा ह महिसासुर ला मार के संसार ला ओकर डर अउ आतंक ले मुकती देवाइन। दाई दुरगा के इही बिजय के कारण ए दिन ला दसराहा के रूप म मनाए जाथे।

दसराहा के महत्व

दसराहा ला 'अबूझ मूहुरत' वाला दिन माने जाथे, जेकर मतलब ए हे कि ए दिन बिना कोनो मूहुरत देखे घलो नवा काम, बयापार(व्यापार) या गाड़ी बिसाना अब्बड़ सुभ होथे। ए दिन समी पेड़ के पूजा करे ले, नीलकंठ चिरई के दरसन करे ले जिनगी के हर छेत्र म बिजय अउ समरिद्धि मिलथे।

(नोट: दसमी तिथि के अपराहन काल 20 अकटूबर के हे, एकरे सेती पूरा देस म दसराहा अउ रावन दहन 20 अकटूबर के ही करे जाही। फेर, बंगाल म सिंदूर खेला अउ दुरगा बिसरजन उदिया तिथि के हिसाब ले 21 अकटूबर के घलो मनाए जाही।)